BACHPAN EXPRESS
बचपन एक्सप्रेस

डाक पंजीयन संख्याः
एस.एस.पी/एल.डब्लू/एन.पी.-571/2018-2020

मासिक समाचार पत्र

UPBIL/2017/73837 | वर्ष : 4 | अंक: 40 | लखनऊ, सितम्बर 2020 | पृष्ठ 8 | मूल्य 20/–

21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप है राष्ट्रीय शिक्षा नीति : राष्ट्रपति

(एजेंसी)

नई दिल्ली। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल एक नीतिगत दस्तावेज नहीं है, बल्कि भारत के शिक्षार्थियों एवं नागरिकों की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है और यह 21वीं सदी की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप देश के लोगों, विशेषकर युवाओं को आगे ले जाने में सक्षम होगी। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर राज्यपालों के सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा, '' शिक्षा के माध्यम से हमें ऐसे विद्यार्थियों को गढ़ना है जो राष्ट्र-गौरव के साथ-साथ विश्व-कल्याण की भावना से ओत-

प्रोत हों और सही अर्थों में वैश्विक नागरिक बन सकें।'' उन्होंने कहा कि 12वीं पंचवर्षीय योजना के आकलन के अनुसार, भारत के कार्यबल में 5 प्रतिशत से भी कम लोगों ने औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त की थी। यह संख्या संयुक्त राज्य अमेरिका में 52 प्रतिशत, जर्मनी में 75 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में 96 प्रतिशत थी। कोविंद ने कहा, '' भारत में व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार में तेजी लाने की आवश्यकता को देखते हुए यह तय किया गया है कि स्कूल तथा उच्च शिक्षा प्रणाली में वर्ष 2025 तक कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जाएगी।''

उन्होंने कहा, '' नयी राष्ट्रीय शिक्षा शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति को प्राथमिकता दी गई है। इससे विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता विकसित होगी और भारतीय भाषाओं की ताकत और बढ़ेगी। विविध भाषाओं वाले हमारे देश की एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने में इससे मदद मिलेगी।'' राष्ट्रपति ने कहा कि 1968 की शिक्षा नीति से लेकर इस शिक्षा नीति तक, एक स्वर से निरंतर यह स्पष्ट किया गया है कि केंद्र व राज्य सरकारों को मिलकर सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में जीडीपी के 6 प्रतिशत निवेश का लक्ष्य रखना चाहिए।

उन्होंने कहा कि 2020 की इस शिक्षा नीति में इस लक्ष्य तक शीघ्रता से पहुंचने की अनुशंसा की गयी है कोविंद ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली ही जीवंत लोकतान्त्रिक समाज का आधार होती है। अत: सार्वजनिक शिक्षण संस्थानों को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है।

कंगना रनौत को मिली 'Y' श्रेणी सुरक्षा

एक्ट्रेस बोलीं– अमित शाह ने बेटी के वचनों का मान रखा

(एजेंसी)

महाराष्ट्र । महाराष्ट्र में शिवसेना और एक्ट्रेस कंगना रनौत के बीच लगातार टकराव चल रहा है। ऐसे में कुछ लोगों ने कंगना रनौत को मारने की धमकी दी है। कंगना 9 सितंबर को मुबंई जानें वाली है ऐसे में कंगना को काफी धमकियां मिल रही थी। कंगना रनौत को केंद्र सरकार की तरफसे अब सुरक्षा के दृष्टिकोण से वाई-प्लस श्रेणी की सुरक्षा उपलब्ध कराई है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद फिल्म उद्योग के एक धड़े में नशीली दवाओं के उपयोग के बारे में बोलने के बाद रनौत को नये सिरे से मिल रही धमकी के मद्देनजर यह फैसला लिया गया है। गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि गृह मंत्रालय ने अर्द्धसैनिक बल के माध्यम से रनौत को वाई-प्लस श्रेणी की सुरक्षा उपलब्ध कराने का निर्णय किया है। अधिकारी ने बताया कि

वाई-प्लस श्रेणी की सुरक्षा के तहत करीब 10 सशस्त्र कमांडों की तैनाती की जाती है। कंगना ने इस सुरक्षा को प्रदान किए जानें के बाद सोशल मीडिया पर केंद्र सरकार का आभार व्यक्त किया है। कंगना रनौत ने भारत के गृह मंत्री अमित शाह को धन्यवाद किया। कंगना रनौत ने ट्वीट कर वाई श्रेणी की सुरक्षा मिलने की पुष्टि की है। कंगना रनौत ने कहा, ये प्रमाण है की अब किसी देशभक्त आवाज को कोई फासीवादी नहीं कुचल सकेगा, मैं अ मित शाह जी की आभारी हूँ वो चाहते, तो हालातों के चलते मुझे कुछ दिन बाद मुंबई जाने की सलाह देते मगर उन्होंने भारत की एक बेटी के वचनों का मान रखा, हमारे स्वाभिमान और आत्मसम्मान की लाज रखी, जय हिंद।

सरकारी संस्थाओं के निजीकरण को लेकर राहुल गांधी का मोदी सरकार पर निशाना- रोजगार और जमा पूंजी नष्ट

(एजेंसी)

नई दिल्ली । कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी लगातार मोदी सरकार पर हमलावर बने हुए हैं। राहुल ने अब सरकारी संस्थाओं के निजीकरण को लेकर निशाना साधा है। राहुल गांधी ने सोमवार को ट्वीट कर कहा कि केंद्र की मोदी सरकार सरकारी कंपनियों का निजीकरण करके रोजगार और जमा पूंजी को नष्ट कर रही है। राहुल गांधी ने ट्वीट में लिखा, आज देश मोदी सरकार-निर्मित कई आपदाएं झेल रहा है जिनमें से एक है अनावश्यक निजीकरण। मोदी सरकार पीयूएस का निजीकरण करके रोजगार व जमा पूंजी नष्ट कर रही है। फायदा किसका? बस चंद 'मित्रों का विकास जो हैं मोदी जी के खास। बता दें कि पिछले कुछ सालों में केंद्र सरकार ने कई सरकारी संस्थाओं के निजीकरण को प्रोत्साहन

दिया है। रेलवे में निजीकरण के तहत स्टेशन बनाए जाने और प्राइवेट ट्रेनें चलाए जाने की तैयारियों के बीच देश की इकलौती सरकारी एयरलाइन एयर इंडिया के निजीकरण को लेकर भी तैयारियां हैं। घाटे में चल रही एयरलाइन पर नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कुछ वक्त पहले कहा था कि निजीकरण ही बेहतर विकल्प है और सरकार अगले कुछ महीनों में यह काम कर लेना चाहती है।

लद्दाख सीमा से नहीं हटेंगी फौजें, बातचीत के 7 दौर नाकाम हो चुके हैं

(एजेंसी)

जम्मू । लद्दाख सेक्टर में एलएसी पर चीन और हिन्दुस्तान के बीच पैदा हुआ तनाव फिलहाल जारी रहेगा। दोनों देशों के बीच 7 दौर की बातचीत फे ल हो चुकी है। चीन दोहरी चाल चल रहा है। एक ओर उसने बातचीत को जारी रखा व दूसरी ओर लद्दाख में कई इलाकों में अपने सैनिकों, तोपखानों, टैंकों, मिसाइलों आदि की संख्या में जबरदस्त बढ़ौतरी कर यह संकेत दिया कि वह निकट भविष्य में पीछे हटने वाला नहीं है। यही नहीं अब तो उसके सैनिक लद्दाख में लाइव युद्धाभ्यास को आरंभ कर भारतीय सैनिकों को डराने की कोशिश में हैं। अधिकारियों के अनुसर, चीन अब भारत से लगती सीमा पर युद्धाभ्यास कर रहा है। चीन ने यह कदम ऐसे समय पर उठाया है जब भारतीय सैनिकों ने ड्रैगन को जोरदार झटका देते हुए पैंगांग झील के दक्षिण किनारे पर स्थित ऊंचाई

वाली चोटियों पर बढ़त ली है। चीन के सरकारी टीवी चौनल सीजीटीएन के मुताबिक पश्चिमोत्तर चीन में चल रहे इस लाइव फायर ड्रिल में एक हजार सैनिक हिस्सा ले रहे हैं। ये सैनिक 100 गाड़ियों से पहुंचे हैं। उन्हें चीन ने रेलवे लाइन के जरिए लद्दाख सीमा के पास तक पहुंचाया है। इस लाइव फायर ड्रिल में चीन तोपों, टैंकों और मिसाइलों का इस्तेमाल कर रहा है। सीजीटीएन के न्यूज प्रड्यूसर शेन शी वेई ने इसका वीडियो ट्वीट करके लिखा कि कृपया इंतजार करिए और देखिए। अधिकारियों के बकौल, पूर्वी लद्दाख में पैंगांग के दक्षिणी किनारे पर भारतीय सेना की जोरदार जवाबी कार्रवाई से बौखालाए चीन ने इस इलाके में कई जगहों पर और ज्यादा सैनिक तथा टैंक भेजे हैं। सैटलाइट से मिली तस्वीरों से पता चला है कि चीन गतिरोध वाले प्वाइंट्स पर अपनी स्थिति को और ज्यादा मजबूत कर रहा है। सूचनाओं के मुताबिक चीन की इस कार्रवाई से यह साफ नजर आ रहा है कि भारत और चीन के रक्षा मंत्रियों के बीच मास्को में वार्ता के बाद भी तनाव कम होने का नाम नहीं ले रहा है। चीन अब सभी गतिरोध वाली जगहों पर और ज्यादा सैनिक तथा टैंक तैनात कर रहा है।

सूत्रों के मुताबिक दोनों ही पक्षों के करीब एक लाख सैनिक पूर्वी लद्दाख में तैनात हैं। चीन वार्ता की टेबल पर तनाव घटाने की बात तो कर रहा है लेकिन जमीन पर वह लगातार अपनी सैन्य तैयारी को और ज्यादा मजबूत करने में जुटा हुआ है। इससे पहले 29 व 31 अगस्त के बीच चीनी सेना ने उकसावे की कार्रवाई करते हुए पैंगांग झील के दक्षिणी किनारे पर यथास्थिति को बदलने का प्रयास किया था लेकिन भारतीय सेना ने उसे विफल कर दिया था। यही नहीं बाद में भारतीय सैनिकों ने पैंगांग के दक्षिणी किनारे पर स्थित लगभग सभी प्रमुख चोटियों पर बढ़त ले ली थी। चीन के सैनिकों की तैनाती बढ़ाने से दक्षिणी किनारे पर तनाव काफी बढ़ गया है।चीन की इस ताजा कार्रवाई का जवाब देने के लिए भारतीय सेना ने भी अपनी तैनाती को बढ़ा दिया है।

दोनों पक्षों द्वारा हजारों सैनिकों, टैंकों, मिसाइलों और तोपों की तैनाती के बाद भयानक सर्दी में भी इसी इलाके में टिके रहने की तैयारियां जोरों पर हैं। इस ओर से सियाचिन में इस्तेमाल किए जाने वाले तम्बू गाड़े चुके हैं।

सैनिकों के लिए करोड़ों रूपयों के वे परिधान खरीदे जा रहे हैं जो उन्हें शून्य ये 40 डिग्री नीचे के तापमान में सुरक्षित रख सकें। जम्मू से प्रतिदिन सैंकड़ों ट्रकों को खाद्य सामग्री के साथ लद्दाख रवाना किया जा रहा है कि राजमार्ग के बंद होने से पहले स्टाक जमा कर लिया जाए।

सम्पादकीय

पबजी पर पाबंदी

चीन की आक्रामकता को कुंद करने के प्रयास के क्रम में भारत सरकार ने कई ऐसे मोबाइल एप को प्रतिबंधित किया है, जो हमारी सुरक्षा और अखंडता के लिए खतरा बन गये. चीनी कंपनियों के स्वामित्व या सहयोग से संचालित ये एप भारतीय उपयोगकर्ताओं के डेटा चुराने और उन्हें अवैध रूप से संग्रहित कर रहे थे. इन्हीं में एक कुख्यात मोबाइल गेम पबजी का एप भी शामिल है, जिसमें एक चीनी कंपनी का निवेश है. पिछले साल इस खेल की लत के शिकार बच्चों में हिंसक और आत्मघाती होने के लक्षणों के सामने आने के बाद कई मनोवैज्ञानिकों और शिक्षकों ने इस पर रोक लगाने की मांग की थी. देश में अनेक जगहों पर कुछ समय के लिए पाबंदी भी लगायी गयी थी. इस साल जनवरी में पंजाब में दायर याचिका में इस डिजिटल गेम की तुलना नशीले पदार्थों के साथ करते हुए बताया गया था कि बच्चों में इसकी लत लग जाती है. अनेक मामलों में यह भी देखा गया है कि यदि अभिभावक बच्चों को इसे खेलने से रोकते हैं, तो बच्चों का व्यवहार आक्रामक हो जाता है. दुनियाभर में मनोचिकित्सक लंबे समय से चेतावनी देते रहे हैं कि डिजिटल खेलों को इस तरह तैयार किया जाता है कि बच्चे व किशोर उसके आदी हो जाएं. यह सही है कि आखिरकार माता-पिता और शिक्षक ही ऐसे खेलों से बच्चों को दूर रख सकते हैं, लेकिन शिक्षा व मनोरंजन में डिजिटल तकनीक बड़ी जरूरत भी बन गयी है. कोरोना महामारी ने इस जरूरत को बहुत ज्यादा बढ़ा भी दिया है. ऐसे में बच्चों व किशोरों पर हमेशा निगरानी रख पाना संभव नहीं है. इसमें अभिभावकों व शिक्षकों की व्यस्तता भी बाधा बनती है. एक समस्या यह भी है कि पाबंदी के लिए समुचित कानूनी प्रावधानों का अभाव है. डिजिटल गेम की गुणवत्ता जांचने की प्रणाली भी नहीं है. जब समस्या गंभीर हो जाती है, तब ही किसी तरह रोक लगायी जाती है, जैसा कि ब्लू व्हेल के मामले में हुआ था. उस गेम में कुछ अनाम-अज्ञात नियंत्रक खेलनेवाले बच्चों को अपने को चोटिल करने, यहां तक कि आत्महत्या करने, के लिए भी उकसाते थे. उस पर भी रोक तब लगी, जब अनेक देशों में हंगामा होने लगा तथा इसके नियंत्रकों को पकड़ा गया. बड़ा बाजार होने से हमारा देश अन्य तकनीकों के साथ डिजिटल गेम कंपनियों के लिए भारी मुनाफा कमाने का जरिया है. आकलनों के अनुसार, डिजिटल गेम कारोबार एक अरब डॉलर से अधिक हो चुका है. नियमन की कमी से सरकार को भी इनसे अधिक राजस्व नहीं मिलता है. दिलचस्प है कि पबजी चीन में प्रतिबंधित है, लेकिन ऐसे खेलों व एप को भारत में नशा बनाकर बेचने से चीनी सरकार और कंपनियों को कोई परहेज नहीं है. यह पाबंदी स्वागतयोग्य है, लेकिन ऐसे खेलों पर नजर रखना भी जरूरी है और लोगों को इनके नुकसान के बारे में भी सचेत रहना चाहिए।

भरोसेमंद संकटमोचक थे प्रणब दा

डॉ प्रणब मुखर्जी शायद देश के वैसे बेहतरीन प्रधानमंत्री थे, जो कभी उस पद पर नहीं रहे. कोलकाता में डाक-तार विभाग के एक कार्यालय में एक क्लर्क की राष्ट्रपति भवन तक की यात्रा हमारे दौर की सबसे शानदार कथा है. राजनीति शास्त्र और इतिहास में परास्नातक और कानून की डिग्री की बदौलत मुखर्जी को एक कॉलेज में सहायक प्राध्यापक का पद हासिल हुआ. बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने कुछ समय के लिए कोलकाता से निकलनेवाले पत्र 'देशेर डाक' के लिए पत्रकारिता भी की थी.उनका राजनीतिक करियर साठ के दशक में शुरू हुआ, जब इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री थीं. उन्होंने मुखर्जी को राज्यसभा में भेजा और इस तरह वे दिल्ली आ गये. साल 1977-78 में जब कांग्रेस के अधिकतर दिग्गज नेताओं ने इंदिरा गांधी का साथ छोड़ दिया, तब प्रणब मुखर्जी उनके साथ बने रहे और पार्टी के कोषाध्यक्ष के रूप में भी काम किया. वह दौर पार्टी और इंदिरा गांधी के लिए बहुत संकटपूर्ण था. जब 1980 में इंदिरा गांधी ने सत्ता में वापसी की, तो मुखर्जी उनके बड़े संकट मोचक के रूप में उभरे. साल 1984 में 'यूरोमनी' पत्रिका ने इन्हें दुनिया के पांच बेहतरीन वित्तमंत्रियों में शुमार किया था. इंदिरा गांधी और उनके बीच भरोसे का ऐसा रिश्ता था कि कुछ अवसरों में उन्हें ऐसे दायित्व भी संभालने के लिए सौंपे जाते थे, जिनमें उन्हें तीन सबसे वरिष्ठ मंत्रियों- आर वेंकट रमण, पीवी नरसिम्हा राव और नारायण दत्त तिवारी- के ऊपर निर्णय लेना होता था. मुखर्जी के साथ मंत्रिमंडल में रहे लोगों के अनुसार, वे बैठकों में इस तरह से सहमति बनाने में कामयाब होते थे कि प्रधानमंत्री का काम आसान हो जाता था. उन्होंने कई मंत्रालयों को संभाला था और कानून, इतिहास, वित्त आदि कई विषयों पर उन्हें महारत हासिल थी. डॉ मनमोहन सिंह के कार्यकाल में तो वे एक दर्जन से भी अधिक मंत्रियों की समितियों के प्रमुख होते थे. राजनीतिक स्तर पर देखें, तो मुखर्जी इंदिरा युग से लेकर मनमोहन सिंह तक मुश्किलों को हल करनेवाले के तौर भी सामने आते हैं. इंदिरा गांधी ने 1982 में एआर अंतुले का इस्तीफा लेने में उनकी मदद ली थी, जिनका नाम भ्रष्टाचार के एक मामले में आ गया था और वे पद छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे. उस दौर में कई राज्यों में मुख्यमंत्रियों को लगातार बदलने में भी इंदिरा गांधी उनका सहयोग लेती थीं. कई दशकों तक फैले अपने राजनीतिक करियर में गांधी परिवार के साथ मुखर्जी का संबंध असमान रहा था. जहां वे इंदिरा गांधी और संजय गांधी के लिए बहुत भरोसेमंद थे, वहीं राजीव गांधी और सोनिया गांधी से उनके रिश्तों में उतार-चढ़ाव रहा. संस्मरणों की अपनी किताब में मुखर्जी ने स्पष्ट किया है कि उनके संबंधों का समीकरण गांधी परिवार के विभिन्न सदस्यों के साथ कैसा रहा था.

राजीव गांधी से उनके तनावपूर्ण संबंधों की शुरुआत श्रीमती गांधी की हत्या के तुरंत बाद हो गयी थी. वे उस समय केंद्रीय वित्त मंत्री थे और कांग्रेस में इंदिरा गांधी के बाद उन्हीं का स्थान माना जाता था, परंतु प्रणब मुखर्जी को कार्यकारी प्रधानमंत्री नहीं बनाया गया. उस समय की अफवाहों का उनके राजनीतिक करियर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा. इंदिरा गांधी की हत्या के समय उनके पुत्र व कांग्रेस महासचिव राजीव गांधी तब बंगाल के दौरे पर थे. प्रणब मुखर्जी भी उस समय राजीव गांधी के साथ थे तथा दोनों एक ही वायुयान से दिल्ली पहुंचे थे. कुछ लोगों का कहना है कि इंदिरा गांधी की हत्या से मुखर्जी अत्यंत दुखी थे. वे वायुयान के शौचालय में जाकर रोये और फिर यान की पिछली सीट पर ही बैठ गये. लेकिन कांग्रेस में उनके विरोधियों ने यह बात चला दी कि वे पीछे बैठ कर राजीव गांधी के खिलाफयोजना बना रहे थे. यह भी कहा जाता है कि राजीव गांधी ने जब 'कार्यकारी प्रधानमंत्री' की बाबत 'सैद्धांतिक प्रश्न' उठाया, तो प्रणब मुखर्जी ने 'वरिष्ठता' पर जोर दिया. इसे बाद में प्रधानमंत्री पद के लिए उनकी इच्छा के रूप में प्रचारित किया गया. मुखर्जी कहते थे, उनसे कई बार पूछा गया कि क्या वे राजीव गांधी से ईर्ष्या करते थे? इसके जवाब में वे इंडिया टुडे के एडिटर अरुण पुरी को दिये गये राजीव गांधी के इंटरव्यू का जिक्र करते थे.

इसमें राजीव गांधी ने स्वीकार किया था कि उन्हें बाद में आभास हुआ कि उनके (प्रणब मुखर्जी के) बारे में कही गयी कई बातें गलत थीं. खुद मुखर्जी को लगता था कि कांग्रेस के पुराने दिग्गजों, जैसे कमलापति त्रिपाठी व वसंत दादा पाटिल से उनकी निकटता ने राजीव को नाराज कर दिया. मुखर्जी के अनुसार, उन्हें राजीव गांधी की उनके प्रति बढ़ती नाराजगी व उनके आसपास मौजूद लोगों पर उनकी निर्भरता से स्थिति भांप लेना चाहिए थी, 'लेकिन जैसी कि मेरी प्रकृति है, मैं अपने कामों में व्यस्त रहा.' स्थिति यह आ गयी कि अप्रैल, 1986 में उन्हें पार्टी से बाहर कर दिया गया.

मुखर्जी के अनुसार, जब उन्हें पार्टी से निकाला गया, तो किसी ने उन्हें सूचित करने तक का कष्ट नहीं किया. बाद में जब धुंध हटी, तो मुखर्जी वापस कांग्रेस के क्षत्रपों में शामिल हो पाये. कई लोगों का मानना है कि वर्ष 2012 में प्रणब मुखर्जी ने खुशी-खुशी राष्ट्रपति बनना इसलिए स्वीकार कर लिया कि वे दूसरे गुलजारीलाल नंदा नहीं बनना चाहते थे.

कोरोना से ज्यादा खतरनाक है, लालची इंसान

पवन नागर

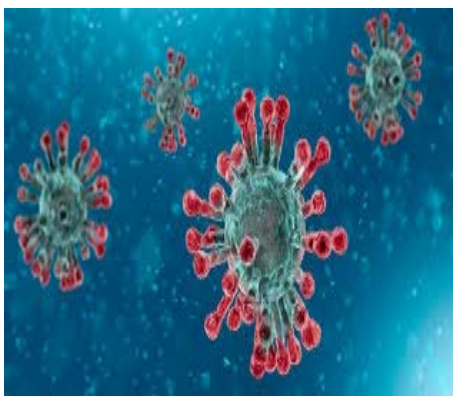

वैसे तो दुनिया में महामारियां बहुत आई हैं और भविष्य में भी आती रहेंगी, परंतु कोविड-19 महामारी थोड़ी अलग इसलिए है क्योंकि इसने पूरी दुनिया की आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ लालची मानव को उन सारी गतिविधियों पर भी पाबंदी लगाने पर मजबूर कर दिया जिनसे लालची मानव प्रकृति को बेहिसाब नुकसान पहुंचा रहा था और खुद को ईश्वर या प्रकृति की व्यवस्था से भी बढ़कर समझने लगा था। धरती पर निवासरत इंसान यह भूल गया था कि प्रकृति की अपनी एक व्यवस्था है और उसी व्यवस्था के अनुसार पूरी दुनिया पिछले हजारों वर्षों से चल रही है। वह भूल गया था कि हमें प्रकृति की इस व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने की बिल्कुल भी कोशिश नहीं करना चाहिएय हमें सिर्फ प्रकृति की व्यवस्था में सहायक की भूमिका निभानी चाहिए और प्रकृति को उसका कार्य स्वतंत्रतापूर्वक करने की आजादी देना चाहिए, इसी में पूरी दुनिया की और हमारी आने वाली पीढ़ियों की भलाई है। लगता है, उसकी इसी भूल का अहसास करवाने और हमें अपने कृत्यों पर विचार करने का अवसर उपलब्ध करवाने महामारी आई है। ऐसा नहीं है कि कोरोना आने से पहले इस दुनिया में लोग मर नहीं रहे थे। कोरोना से पहले भी लोग मर रहे थे और कोरोना खत्म हो जाने के बाद भी मरेंगे, क्योंकि कोरोना के साथ इंसान के लालच का शायद ही अंत हो। कोरोना से पहले, दुनियाभर की सरकारों द्वारा जनता को दिखाया गया आधुनिकता के आडंबर और विकास का सपना मार रहा था। दूसरे शब्दों में कहें तो इंसान के कभी कम न होने वाले लालच का शिकार हो रहे थे। यह इंसानी लालच जितने बड़े पैमाने पर जीवन को लील रहा है उतने बड़े पैमाने पर तबाही मचाने के लिए कोविड-19 जैसे हजारों वायरस भी कम पड़ेंगे। मध्यप्रदेश के महिला एवं बाल विकास विभाग के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में जनवरी 2016 से जनवरी 2018 के बीच करीब 57,000 बच्चों ने कुपोषण के चलते दम तोड़ दिया। मध्यप्रदेश में हर रोज 92 बच्चों की मौत कुपोषण के चलते होती है, जबकि सरकार हर साल कुपोषण मिटाने के लिए करोड़ों-अरबों रुपये खर्च करती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये पैसे किसके लालच की भेंट चढ़ जाते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने एक्सीडेंटल डेथ्स और सुसाइड नामक रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2016 में 11 हजार 379 किसानों ने आत्महत्या की थी। यानी हर महीने 248 और हर दिन 31 किसानों ने अपनी जान दी। हर साल हजारों करोड़ रुपये किसानों और खेती की दशा सुधारने के लिए खर्च किए जा रहे हैं, लेकिन उनका कोई अता-पता नहीं चलता। हर घंटे एक महिला की दहेज हत्या होती है, तीन साल में करीब 25 हजार मौतें। तब भी दहेज लोभियों का कोई अंत होता नजर नहीं आता। हाल ही में दिल्ली में हुई हिंसा पिछले 18 साल में देश का तीसरा सबसे बड़ा सांप्रदायिक दंगा था। सन् 2004 से 2017 के बीच देश में 10399 दंगे हुए, जिनमें 1605 लोगों की जानें गईं। इससे पहले 2002 में हुए गुजरात दंगों में 2000 से ज्यादा लोगों की जानें गई थीं। सब जानते हैं कि दंगे होते नहीं हैं, बल्कि सत्ता और शक्ति के लालची लोगों द्वारा कराए जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार वायु-प्रदूषण से हर साल 70 लाख लोगों की मौत होती है। वायु-प्रदूषण दुनियाभर में, खासतौर पर भारत जैसे तेजी से विकसित हो रहे देशों में तेजी से बढ़ रहा है। यही वजह है कि वायु-प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या भी उतनी ही तेजी से बढ़ रही है और यह महामारी का रूप लेता जा रहा है। इंसान की बे-लगाम महत्वाकांक्षा ने, उपभोग की कभी न मिटने वाली भूख ने केवल वायु ही नहीं, बल्कि प्रकृति के हर अवयव को बुरी तरह प्रदूषित कर दिया है। विकास के लालच में हम विनाश को आमंत्रित करते जा रहे हैं। मार्च 2018 में संसद में एक सवाल के जवाब में तत्कालीन कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह का कहना था कि 2014-15 और 2018-19 के बीच कीटनाशकों के कारण अकेले महाराष्ट्र में ही 272 किसानों की मौत हुई। इन्हीं कीटनाशकों की वजह से हमारी मिट्टी, पानी और हवा सब जहरीले हो रहे हैं, हमारी फसलों और पेड़-पौधों में जहर भर रहा है, किसानों और उनके मवेशियों के मरने और बीमार होने की घटनाएं सामने आ रही हैं और देश की जनता जहरयुक्त अनाज, फल, सब्जियां खाने को मजबूर है। यह सब हो रहा है, ज्यादा-से-ज्यादा पैदावार करके ज्यादा-से-ज्यादा पैसा कमाने की इंसानी हवस के चलते। कोरोना वायरस की वजह से पूरे देश में लगाए गए लॉकडाउन से भले ही देश की अर्थव्यवस्था पर असर पड़ रहा हो, लेकिन पूरा देश प्रदूषण मुक्त हो रहा है। नदियां साफ हो रही हैं। हिमालय जालंधर से दिख रहा है। गंगा का पानी पीने लायक हो गया है। मतलब यह है कि लॉकडाउन से पूरा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व साफ हवा में सांस ले रहा है। इसकी पुष्टि अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी की है। पिछले एक दशक में ही भारत में लगभग 14 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे गए हैं। सड़क दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या से चिंतित सुप्रीम कोर्ट को यहां तक कहना पड़ा कि देश में उतने लोग सीमा पर या आतंकी हमले में नहीं मरते जितने सड़कों पर गड्ढों की वजह से मर जाते हैं। दुनियाभर में हर साल 70 लाख लोग और भारत में हर दिन करीब 2739 लोग तंबाकू व अन्य धूम्रपान उत्पादों के कारण कैंसर व अन्य बीमारियों से दम तोड़ देते हैं। श्विश्व स्वास्थ्य संगठनश् के मुताबिक दुनियाभर में हर साल 30 लाख लोग शराब पीने की वजह से मर जाते हैं, लेकिन कोई भी सरकार शराब, सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू तथा गुटखे पर प्रतिबंध नहीं लगाती। लगाती भी है, तो केवल दिखावे के लिए। क्यों? क्योंकि इन चीजों से उन्हें सर्वाधिक राजस्व प्राप्त होता है, इन्हीं चीजों से नेताओं और अफसरों की कमाई होती है।

यदि जिम्मेदार लोग थोड़ी सी सावधानी और ठंडे दिमाग से अपनी जिम्मेदारी निभाते तो कोरोना वायरस का इतना हल्ला भी नहीं होता और अर्थव्यवस्था की हालत भी इतनी बुरी नहीं होती। वास्तव में कोरोना हमें यही संदेश देने के लिए आया है कि जितनी आवश्यकता हो, उतना ही उपभोग करो और फिजूल की विस्तारवादी सोच को त्याग दो। लालच छोड़ दो और जियो और जीने दो वाली सोच को अपने जीवन में उतार लो। कोरोना आज नहीं तो कल चला ही जाएगा, परंतु यदि हमने इस कठिनाई भरे समय से भी सीख नहीं ली तो प्रकृति हमें आगे इससे भी भयंकर महामारियां देने को तैयार रहेगी।

मीडिया की विश्वसनीयता का सवाल

शेष नारायण सिंह

अपराधों के राष्ट्रीय रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के ताजा आंकड़े आ गए हैं। 2019 में देश में 140,000 लोगों ने आत्महत्या की थी। इनमें से एक तिहाई लोगों ने पारिवारिक समस्याओं के दबाव में यह कदम उठाया। करीब 23 प्रतिशत लोगों ने बीमारी या नशाखोरी के कारण आत्महत्या की। आठ प्रतिशत लोगों ने गरीबी, कर्ज, बेरोजगारी और दिवालियापन से परेशान होकर अपनी जान ले ली। आत्महत्या करने वालों में दक्षिणी राज्यों के लोग सबसे ज्यादा थे। इनमें आधे से ज्यादा संख्या महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक के थे। उत्तर प्रदेश और बिहार में सबसे कम आत्महत्याएं होती हैं। खेती किसानी के काम में लगे लोगों में आत्महत्या की प्रवृत्ति में भारी कमी आई है। दुर्घटना और आत्महत्या के आंकड़ों के अनुसार 2016 में करीब 11 हजार से ज्यादा लोगों की मृत्यु हुई थी जबकि 2019 में आत्महत्या की संख्या में 10 प्रतिशत की कमी आई है। आत्महत्या वास्तव में सभ्यता, मानवीय जिजीविषा, सामाजिक समरसता की हार है। अगर कोई व्यक्ति आत्महत्या करने का फैसला करता है तो उसके लिए वह खुद तो जिम्मेदार है ही, उसका परिवार, उसके दोस्त, उसके आसपास के लोग और समाज भी कम जिम्मेदार नहीं है। आत्महत्या के कारणों पर दुनिया भर में बात होती रहती है। आम तौर पर वे लोग ही आत्महत्या करते हैं जिनको अपना जीवन बेमतलब लगने लगता है। काल्पनिक या वास्तविक दु:ख को बहुत बड़ा बनाकर आंकना, अपनों से निराशा मिलना, अपनों की उम्मीदों पर खरा न उतरने का डर, अपनी महत्वाकांक्षा को हासिल न कर सकने का भय, प्यार में धोखा, आर्थिक तंगी आदि कुछ बातें हैं जिनके कारण लोग आत्महत्या करते हैं। कुछ आत्महत्याएं बीमारी के कारण भी होती हैं। अवसाद के मरीजों में यह प्रवृत्ति ज्यादा पाई जाती है। अवसाद के मरीजों के रिश्तेदारों को चाहिए कि अपने प्रियजन को यह विश्वास दिलाते रहें कि उनका जीवन महत्वपूर्ण है उसकी समाज को आवश्यकता है। पिछले दिनों मुंबई में एक फिल्म अभिनेता की मृत्यु के बाद उसकी आत्महत्या या हत्या राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनी हुई है। अभिनेता नौजवान था, कुछ सफल फिल्मों में काम कर चुका था, भविष्य में भी उससे सिनेमा उद्योग और दर्शकों को उम्मीदें थीं। मुंबई के उपनगर बांद्रा के उसके घर में एक दिन उसका शव फांसी पर लटकता हुआ मिला। पुलिस ने उसको आत्महत्या मानकर जांच करना शुरू कर दिया। बड़े अभिनेता की मृत्यु का मामला था इसलिए मीडिया में भी खबर आई। टीवी चौनल भी सक्रिय हो गए। उसी बीच कुछ टीवी चौनलों ने उनकी मृत्यु को अपना कारोबार बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करने का फैसला कर लिया। सुबह शाम वही खबर, दिन भर वही खबर, उसी पर बहस, उसी का विश्लेषण यानी टीवी पत्रकारिता के जितने भी पक्ष हैं सब उसी पर केन्द्रित हो गए। अपने देश में सिनेमा से जुड़े लोगों के बारे में बड़ी आबादी में उत्सुकता रहती है। जब से सिनेमा शुरू हुआ है तब से ही फिल्मी चटखारेदार खबरें महत्व पाती रही हैं। फिल्मी गपबाजी को केंद्र में रख कर कई पत्रिकाएं भी निकाली गईं और बहुत बड़ा कारोबार खड़ा कर लिया। जाहिर है फिल्मी लोगों के निजी जीवन को चटखारे लेकर सुनाना एक बड़ा कारोबार है। टीवी पत्रकारिता के कुछ स्वनामधन्य संपादकों ने मुंबई के फिल्मी अभिनेता स्व सुशांत सिंह राजपूत के जीवन और उनकी मृत्यु से जुड़ी खबरों को जिस मुकाम पर लाकर छोड़ दिया है, वह पत्रकारिता तो किसी तरह से नहीं कही जा सकती। देश तरह-तरह के संकट से जूझ रहा है। कोरोना की महामारी पूरी दुनिया को चपेट में लिए हुए है। उसके कारण दुनिया भर में आर्थिक मंदी है, लोगों की नौकारियां जा रही हैं। अपनी अर्थव्यवस्था भारी संकट के भंवर में है। शहरों में लोग भीख मांगने के लिए अभिशप्त हैं। शहरों से भागकर गांवों में गए लोगों को सरकारी वायदों के बावजूद कहीं कोई काम नहीं मिल रहा है। लद्दाख में चीन की कारस्तानी राष्ट्रीय चिंता का विषय बनी हुई है। इन सारे विषयों पर देश की जनता को सही खबर और विश्लेषण पंहुचाना मीडिया का कर्तव्य है लेकिन यह सब पीछे चला गया है। सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु की खबरों को कई टीवी चौनलों ने स्थायी खबर बना दिया है। पत्रकारिता से जुड़े लोगों के लिए यह चिंता की बात है।बिहार के एक संपन्न परिवार का बेटा, मुंबई की फिल्मी दुनिया में अपनी किस्मत आजमाने के उद्देश्य से गया था। उच्च शिक्षा प्राप्त इस नवयुवक के सामने रोजी-रोटी के बहुत सारे अवसर थे लेकिन उसने फिल्म का रास्ता चुना और उसें सफलता भी पाई। किन्हीं कारणों से उनकी मृत्यु हो गई। शव लटका हुआ मिला था अकाल मृत्यु की घटना पुलिस की जांच का विषय होती है। मुंबई की पुलिस ने जांच शुरू की लेकिन बाद में पता चला कि पुलिस ने कोई प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआई आर)दर्ज किये बिना ही जांच शुरू कर दिया था। यह बहुत ही गैरजिम्मेदार काम है। एफआई आर दर्ज किये बिना जांच का कोई मतलब नहीं है। मुंबई पुलिस ने एक इन्क्वेस्ट लिखकर जांच शुरू कर दिया था। इन्क्वेस्ट का शब्दकोशी मतलब भी श्अप्रत्याशित मृत्यु के कारणों की जांचश् ही है लेकिन मुकदमा चलाने के लिए तो एफआई आर जरूरी होता है। मुंबई पुलिस की जांच पर शक तब शुरू हुआ जब उसने उन लोगों को पकड़-पकड़ कर पूछताछ शुरू कर दिया जिन्होंने कभी सुशांत सिंह राजपूत को फिल्म में काम करने का वायदा किया था लेकिन बाद में मुकर गए थे। यह भी जांच शुरू हो गई कि मुंबई की फिल्मी दुनिया में परिवारवाद बहुत ज्यादा है। साधारण व्यक्ति को भी लगने लगा कि जांच को भटकाया जा रहा है। परिवार को लगा कि मुंबई पुलिस जांच को सही दिशा में नहीं ले जा रही है। सुशांत के एक जीजा बहुत बड़े पुलिस अधिकारी हैं, एक अन्य जीजा बहुत ही बड़े वकील हैं। जाहिर है बिना एफआई आर की जांच का हश्र उन लोगों को मालूम था। परिवार ने स्व सुशांत के राज्य बिहार की राजधानी पटना में एक एफआई आर दर्ज करवा दिया। उन्होंने यह भी कहा कि मुंबई पुलिस की जांच सही दिशा में नहीं जा रही है इसलिए उनको पटना में एफआई आर लिखवाना पड़ा। इस बीच यह भी चर्चा शुरू हो गई कि महाराष्ट्र के एक राजनीतिक परिवार का भी उनकी मृत्यु से कुछ लेना-देना हो सकता है। अब तक पूरे देश के कल्याण का ठेका ले चुके कुछ टीवी चौनल मैदान ले चुके थे। उनको एक विलेन की जरूरत थी तो उन्होंने सुशांत सिंह राजपूत के साथ कुछ महीनों तक लिव-इन के रूप में रह चुकी एक अभिनेत्री को विलेन बनाया और मीडिया ट्रायल शुरू हो गया। मुंबई के राजनीतिक परिवार की मिलीभगत के मद्देनजर उस परिवार की पार्टी के विरोधी राजनेता भी आग में घी डालने लगे। बात बहुत आगे तक बढ़ गई और सुशांत की दोस्त अभिनेत्री की मौजूदगी के कारण स्त्री विरोधी मानसिकता वाले कुंठित लोगों को रोज की खुराक मिलने लगी। इस बीच सुशांत सिंह के पिताजी ने पुलिस को बताया कि उनके बेटे से उस की लिव-इन दोस्त ने करीब पन्द्रह करोड़ रुपये ठग लिए हैं। सुशांत सिंह के बैंक खातों में इस रकम का कोई उल्लेख नहीं था। जाहिर है यह धन नम्बर दो का रहा होगा। सीधा-सीधा कालेधन का केस बनता है। लिहाजा ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने भी जांच शुरू कर दी। कहीं से पता चला कि कुछ नशीली दवाओं का भी इस्तेमाल हुआ था। यह नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो का विषय है, वह भी जांच में जुट गए। विपक्ष ने आरोप लगाना शुरू कर दिया कि बिहार के इसी साल होने वाले चुनावों के मद्दे नजर बिहार के लोगों की सहानुभूति बटोरने के चक्कर में केंद्र सरकार ने सभी एजेंसियों को लगा रखा है। महाराष्ट्र में इस समय जिस पार्टी की सरकार है उस पर आरोप है कि उसने केंद्र सरकार में राज करने वाली पार्टी को धोखा दिया है। आरोप लगने लगे कि सरकार से बदला लेने के लिए केंद्र सरकार ने अभियान चला रखा है और एक हत्या या आत्महत्या के मामले को राजनीतिक कारणों से अपने वफादार टीवी चनैलों की मार्फत हवा दी जा रही है। इस सारी प्रक्रिया में अभिनेत्री रिया चक्रवर्ती और उसके परिवार वालों को ठेकेदार टाइप चौनलों ने सूली पर चढ़ाने का पूरा बंदोबस्त कर रखा था। जिन चौनलों ने संतुलित खबर देने का फैसला ले रखा था तो इस पूरे प्रकरण के दौरान उनकी टी आर पी गिर रही थी। जाहिर है देश की जनता चटखारेदार खबरों को पसंद कर रही थी। लेकिन इस बीच ठेकेदार चौनल की योजना में एक बड़ा खलल पैदा हो गया। एक प्रतिद्वंदी चौनल ने विलेन के रूप में स्थापित की जा चुकी रिया चक्रवर्ती का पौने दो घंटे का इंटरव्यू प्रसारित कर दिया। उस इंटरव्यू में अभिनेत्री ने कुछ ऐसे सवाल पूछे जिनका जवाब जांच एजेंसियों को अपनी जांच आगे बढ़ाने के लिए जरूरी होगा। मसलन उसने पूछा कि सुशांत की मृत्यु के छरू दिन पहले उसने उनका घर छोड़ दिया था। जो लोग उन छरू दिनों तक उसके साथ रहे उनसे सवाल क्यों नहीं पूछे जा रहे हैं। उसने परिवार के लोगों के व्यवहार पर बहुत सारे सवाल उछाल दिए। उसको विलेन बनाकर जांच के पहले ही उसको अपराधी साबित करने वाली बिरादरी के हाथ से तोते उड़ गए।

परिवार के लिए भी मुश्किल पैदा हो गई क्योंकि रिया चक्रवर्ती के सुशांत का घर छोड़ने के बाद उनकी एक बहन उनके साथ उनकी देखभाल करने के लिए रही थी। शिकारी टीवी चौनलों और परिवार वालों ने माहौल बना रखा था कि रिया के कारण ही सुशांत को अवसाद की बीमारी हुई थी लेकिन एक अन्य बड़े अखबार ने उनकी बहनों का वह बयान छाप दिया जिससे पता चलता है कि परिवार को मालूम था।

अकुशल श्रमिकों के लिए भी हों मौके?

डॉ इरोल डिसूज़ा

शहरों में आनेवाले ग्रामीण प्रवासी अक्सर खराब रिहायशी इलाकों में, अमूमन मलिन बस्तियों में रहते हैं, जहां जीवनयापन की तमाम दुश्वारियां होती हैं. ऐसी जगहों पर मूलभूत सुविधाओं से जुड़े सार्वजनिक ढांचे का बड़ा अभाव होता है. खराब आवास के लिए भी उन्हें अपनी आमदनी का बड़ा हिस्सा व्यय करना होता है. उन्हें मिलनेवाली तनख्वाह आवासीय खर्च को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होती है, इससे अन्य खर्चों और बचत के लिए गुंजाइश कम हो जाती है. इसमें आश्चर्य नहीं कि गांवों से पलायन कर शहरों में पहुंचे अकुशल लोग इतनी कमाई नहीं कर पाते कि उनका जीवन स्तर ऊपर उठ सके. अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य तक पहुंच ही उनके परिवार की पीढ़ीगत तरक्की का अहम जरिया है. अनुभव बताता है कि ऐसे लोग खराब आवासीय इलाकों या मलिन बस्तियों में इसलिए रहना स्वीकार करते हैं, ताकि वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए कुछ बचत कर सकें. जीवन से जुड़ी मूलभूत सुविधाओं में निवेश करने की सरकार की अक्षमता, इन परिवारों की मुश्किलों का कारण बनती है. ऐसे परिवारों के बच्चे स्कूलों में रहने की बजाय अक्सर भीख मांगते हुए दिखते हैं या गलियों और सड़कों पर सामान बेचते नजर आते हैं, कई बच्चे तो आपराधिक कार्यों में भी संलिप्त हो जाते हैं. वतर्मान में,ि वश्व की आधी आबादी शहरों की निवासी हो चुकी है और अगले कुछ दशकों में अनेक विकसित देशों में पूर्ण रूप से शहरीकरण का विस्तार हो जायेगा. दुनियाभर में वर्तमान में हर चौथा व्यक्ति मलिन बस्तियों में रहता है. विकासशील देशों में तो यह अनुपात और भी अधिक है- ताज्जुब की बात है कि भारत में यह 24 प्रतिशत है. शहरीकरण की तेज प्रक्रिया की वजह से अनेक विकासशील देशों में जल आपूर्ति, जल निकासी, सार्वजनिक स्वास्थ्य पर बोझ बढ़ रहा है. आने वाले वर्षों में ऊर्जा खपत से कॉर्बन उत्सर्जन बढ़ेगा और इससे पर्यावरण भी प्रभावित होगा. देश में शहरी आबादी को वायु प्रदूषण की वजह से जहरीली हवा में सांस लेना होगा और साथ ही वायु प्रदूषण से मौतें भी होंगी. अक्सर, शहरों में मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी समस्याओं के लिए गरीब आबादी को ही जिम्मेदार ठहरा दिया जाता है. अक्सर उन्हें गंदगी और अव्यवस्था के लिए दोषी कहा जाता है, जबकि सार्वजनिक सेवाओं को उपलब्ध कराने में शहरी प्राधिकरण संघर्ष कर रहे होते हैं. विभिन्न स्तरों पर शहरों को रहने योग्य तथा अपने नागरिकों का भविष्य बेहतर बनाने की कोशिशें होती रहती हैं. आवासीय योजनाओं के लिए सार्वजनिक जमीनों को खाली कराने और योजनाबद्ध तरीके से उसके अधिग्रहण के बजाय अमूमन विध्वंस और लोगों के विस्थापन को समाधान के तौर पर देखा जाता है. पाइप जलापूर्ति से गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों को दूषित पानी की समस्या से छुटकारा मिल सकता है, साथ ही अगर ऐसे स्थानों पर जलनिकासी की उचित व्यवस्था हो, तो घरों की मरम्मत कराने की दिक्कतों और जल प्रदूषण से होनेवाली बीमारियों से भी निजात मिल सकती है. स्ट्रीट लाइट होने से ऐसे जगहों पर होनेवाले अपराधों में कमी आती है. अगर आम लोगों के हितों को ध्यान रखकर उक्त बातों पर काम किया जाये, साथ ही समय और धन की समस्या के समाधान के लिए ऐसे समुदायों की सहमति से परियोजना की कुल लागत में उनका हिस्सा तय किया जाये, तो इन सुविधाओं के लिए उन्हें अन्य विकल्पों को आजमाने की जहमत नहीं उठानी पड़ेगी.

शहरी क्षेत्रों का भविष्य कुशल लोगों की आय में निरंतर वृद्धि पर टिका है. अनस्ट्रक्चर्ड फिजिकल एक्टिविटी वाले कार्यों का ऑटोमेशन नहीं हो सकता. ऐसी दशा में इन क्षेत्र में रोजगार की मांग बनी रहेगी, लेकिन जीवनयापन के लिए इन क्षेत्रों में काम करनेवालों को पर्याप्त तनख्वाह नहीं मिल सकेगी. खास बात है कि पलायन कर शहरी क्षेत्रों में पहुंचनेवाले ज्यादातर प्रवासी इसी कार्यक्षेत्र के दायरे में होंगे.

शहरों की कामयाबी इस बात निर्भर करेगी कि वे अनेक कार्यों की परिस्थितियों के लिए वे कैसे समावेशी समाधान निकालते हैं और कैसे अर्धकुशल लोगों के लिए भी रहने की व्यवस्था कर पाते हैं, ताकि शहरों व वहां के निवासियों की स्थिति में सुधार हो सके. शहरों में भीड़ लगातार बढ़ती जायेगी और इससे लाभ तथा शहरी सघनता के दुष्प्रभाव दोनों होंगे. शहरों में लोगों को आमदनी के लाभ के साथ-साथ लगातार संकरी सड़कों, अशुद्ध एवं अपर्याप्त जलापूर्ति और वायु प्रदूषण जैसी अनेक समस्याओं से भी जूझना होगा. मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने, नियमितीकरण और आबादी के सभी वर्गों की सुविधाओं पर केंद्रित राजनीति उनकी बेहतरी के लिए अहम होगी. अन्यथा, इस बात की अधिक संभावना है कि शहर जिस तरह से बढ़ रहे हैं, उससे आगे के हालात बहुत ही चिंताजनक और खतरनाक होंगे.

संस्थानिक तौर पर कामगारों की समस्याओं को नजरअंदाज किये जाने से उनकी दिक्कतें लगातार बढ़ेंगी, इससे वे अवसरवादी तरीके से भीड़ का हिस्सा बनेंगे. नीतियों में टैरिफ और विनियामक बाधाओं को दूर करने, लेन-देन की लागत को कम करने तथा कारोबारी सुगमता को बढ़ावा देने पर जोर रहा है.

इससे आगे व्यापार विकास और आर्थिक वृद्धि होगी, जिससे इसका विस्तार शहरों के निकटवर्ती क्षेत्रों में भी होगा. अधिकांश लोग, जो अनस्ट्रक्चर्ड फिजिकल एक्टिविटी से जुड़ी नौकरियों में होंगे, उनका भविष्य स्थायी तौर पर उनकी धन तथा शैक्षणिक निवेश तक बेहतर पहुंच पर टिका होगा. यह उच्च कौशल वाले कार्यों में उनकी भागीदारी के लिए अहम होगा. आनेवाले दशकों में यह सबसे महत्वपूर्ण होने जा रहा है. इन प्रयासों के बगैर उस प्रश्न का समाधान नहीं हो सकता, जिसका हमने शुरुआत में जिक्र किया था- ग्रामीण इलाकों से पलायन कर शहरों में आनेवालों के लिए शहरी प्रवास लाभदायक नहीं होगा, बजाय इसके लिए उन्हें शहरों में गुमनामी व क्रयशक्ति का एक अस्थायी स्रोत मिलेगा. यह बेहतर मौके और जीवनयापन की उनकी खोज का स्थायी समाधान नहीं होगा.

गर्मियों में निखरी त्वचा के लिए डायट में शामिल करें यह चीजें

मौसम के अनुसार आप अपना स्किन केयर प्रोडक्ट तो बदल लेती हैं, लेकिन क्या आप जानती है कि अंदर से निखरी और स्वस्थ त्वचा के लिए मौसम के अनुसार डायट में भी बदलाव करना जरूरी है। गर्मियों में भी आपकी त्वचा खिली-निखरी बनी रहे इसके लिए सिर्फ सनस्क्रीन लगाना ही काफी नहीं है, बल्कि डायट में कुछ खास चीजों को शामिल करना भी जरूरी है।

दमकती त्वचा के लिए डायट में शामिल करें ये चीजें-

कैरोटीन- सूर्य की हानिकारक किरणों से त्वचा को बचाने के लिए गर्मियों में अल्फा और बीटा कैरोटीन से भरपूर चीजें जरूर खाएं, जैसे- गाजर, आम, टमाटर, पालक, कद्दू आदि। ये कुदरती एसपीएफका काम करता है जिससे आपकी त्वचा सूर्य की हानिकारक

किरणों के असर से बची रहती है और स्किन का ग्लो भी बना रहता है। विटामिन सी- कोलेजन प्रोटीन का समूह होता है जो त्वचा को मुलायम और जंवा बनाए रखने में मदद करता है। विटामिन सी कोलेजन के निर्माण में मदद करता है जिससे त्वचा पर उम्र की लकीरें जल्दी नहीं उभरती और चेहरे की रंगत भी फीकी नहीं पड़ती। यह स्किन कैंसर के खतरे को भी कम करती है। कीवी, संतरा, स्ट्रॉबेरी, पीली शिमला मिर्च, ब्रोकोली आदि में विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है, अत: इन्हें डायट में शामिल करना न भूलें। हेल्दी फैट- त्वचा की नमी और लचीलापन बना रहे इसके लिए आपके खाने में कुछ हेल्दी फैट्स का होना जरूरी है।

हेल्दी ऑयल त्वचा के लिए जरूरी तेल का निर्माण करते हैं जिससे लचीलापन और त्वचा की नमी बनी रहती है। ओमेगा 3 फैटी एसिड से भरपूर चीजों को डायट में शामिल करें। एवाकाडो, अखरोट, सामन, ऑलिव ऑयल आदि में हेल्दी फैट होते हैं जो निखरी, मुलायम त्वचा के लिए जरूरी है। प्रोटीन- त्वचा को हेल्दी रखने के लिए प्रोटीन बहुत जरूरी है। यह शरीर के टिश्यू बनाने में मदद करने के साथ ही एंजाइम्स और हार्मोन्स में भी अहम योगदान करता है। हेल्दी स्किन के लिए डायट में प्रोटीन से भरपूर अंडा, मछली, बीन्स आदि शामिल करें।

पानी और जूस- शरीर के साथ ही त्वचा को हाइड्रेट रखने के लिए दिन भर में 8-10 ग्लास पानी जरूर पीएं। यह त्वचा की नमी बनाए रखने के साथ ही उसकी चमक भी बरकरार रखेगी, इसके अलावा ताजे फल और सब्जियों का जूस जिसमें सोडियम की मात्रा कम हो, भी पीएं। ग्रीन टी पीना भी त्वचा के लिए अच्छा होता है। यह यूवी किरणों से सुरक्षा के साथ ही स्किन कैंसर के खतरे को भी कम करती है।

थायराइड में परहेज सबसे जरूरी

जानिए क्या खाएं और क्या नहीं

थायराइड की समस्या आज बहुत आम हो गई है लोग तेजी से इसके शिकार हो रहे हैं। खासकर औरतें। 30 से 60 की उम्र की महिलाएं इसकी चपेट में आती है जिसके चलते उन्हें प्रेग्नेंसी कंसीव करने में मुश्किल होती है। ऐसे में बीमारी से ग्रस्त इंसान के दिमाग में सबसे पहले बात यहीं आता कि अब डाइट कैसी खाएं ताकि इसे कंट्रोल में रखा जा सके और क्या चीज खाने से सेहत को नुकसान होगा। आज हम आपको इस बारेमें ही बताते हैं लेकिन उससे पहले देते हैं थाइराइड की वजह और इससे होनी वाली परेशानियों के बारे में...

थायराइड एक एंडोक्राइन ग्लैंड जो गले में बटरफ्लाई के आकार का होता है। इससे थायराइड हार्मोन निकलता है जो शरीर में मेटाबॉलिज्म को सही लेवल में रखता हैं लेकिन जब यह हार्मोन असंतुलित हो जाता

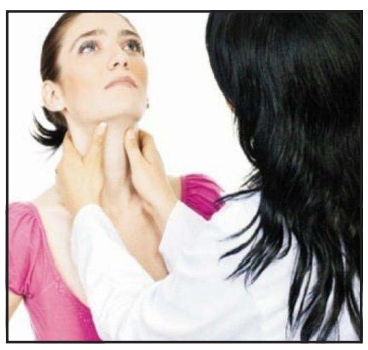

है तो यह समस्या शुरु होने लगती है। थायराइड दो तरह का होता है हाइपो थायराइड और हाइपर थायराइड महिलाएं ज्यादा हाइपो थायराइड की शिकार होती हैं इसलिए पहले इस बारे में बताते हैं, हाइपो में थायराइड ग्लैंड सक्रिय नहीं होता, जिससे शरीर में टी3, टी4 हार्मोन नहीं पहुंच पाता।

जिससे वजन अचानक बढ़ जाता है...
शरीर में सुस्ती महसूस होती है
इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाती है
पीरियड्स अनियमित हो जाते है
कब्ज की शिकायत रहती है
चेहरे और आंखों में सूजन आ जाती है
ठुड्डी, पेट पर अनचाहे बाल आने लगते हैं..

अब बात करते हैं,,, थायराइड हैं तो क्या खाएं और क्या नहीं।

पहले जानिए आपको खाना क्या है...

क्या खाएं?

आयोडिन से भरपूर चीजें, टमाटर, मशरुम, केला, संतरा, सी फूड, फिश, चिकन, अंडा, टोंड दूध और उससे बनी चीजें जैसे दही, पनीर आदि खाएं। फिजिशियन की सलाह पर से आप विटामिन, मिनिरल्स, आयरन सप्लीमेंट्स ले सकते हैं।

क्या नहीं खाएं?

सोयाबीन और सोया प्रोडक्ट, रेड मीट, पैकेज्ड फूड, बेक्ररी आइट्म जैसे केक, पेस्ट्री, स्वीट पोटैटो, जंकफूड, नाशपाती, स्ट्रॉबेरी, मूंगफली, बाजरा आदि, फूलगोभी, पत्ता गोभी, ब्रोकली, शलगम आदि।

अब बात करते हैं हाइपरथाइरायड की...

इसमें थायराइड ग्लैंड बहुत ज्यादा सक्रिय हो जाता है। टी3, टी4 हार्मोन जरुरत से अधिक मात्रा में निकलकर ब्लड में घुलने लगता है।

जिससे वजन तेजी से कम हो जाता है
मांसपेशियां कमजोर हो जाती है
भूख ज्यादा लगती है
अच्छी नींद नहीं आती,
स्वभाव चिड़चिड़ापन,
पीरियड्स में अनियमितता,
अधिक ब्लीडिंग की समस्या,
गर्भपात का भी खतरा बना रहता है।
अनचाहे बाल

क्या खाएं?

हरी सब्जियां, साबुत अनाज, ब्राउन ब्रैड, ओलिव ऑयल, लेमन, हर्बल और ग्रीन टी, अखरोट, जामुन, स्ट्रॉबेरी, गाजर, हरी मिर्च, शहद। मैदा से बने प्रोडक्ट जैसे पास्ता, जंकफूड, मैगी, व्हाइट ब्रेड, सॉफ्ट ड्रिंक, अल्कोहल, कैफीन, रेड मीट, ज्यादा मीठी चीजें जैसे **मिठाई, चॉकलेट।**

इसके साथ ही सैर और हल्की-फुल्की एक्सरसाइज करें। जितना हो सकें तनाव मुक्त रहने की और हैल्दी लाइफस्टाइल अपनाएं। थायराइड को आप हैल्दी लाइफस्टाइल अपना कर कंट्रोल में रख सकती हैं। आपको हमारा पैकेज कैसे लगा कमेंट बॉक्स में जरूर बताएं और साथ ही में शेयर करें हैल्थ से जुड़ी प्रॉब्लम्स ताकि हम जल्द उससे जुड़े समाधान आपसे सांझा करें।

ब्लड इंफेक्शन का संकेत देते हैं शरीर में आएं ये बदलाव

खून शरीर के अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करता है। साथ ही इससे बॉडी टेम्प्रेचर भी कंट्रोल में रहता है लेकिन प्रदूषित हवा व गलत खान-पान के चलते खून में कुछ ऐसे तत्व चले जाते हैं, जो उसे इंफेक्टेड कर देते हैं। भारत में हर साल करीब 10 लाख लोग ब्लड इंफेक्शन का शिकार हो जाते हैं। ब्लड इन्फेक्शन कई तरह का हो सकता है जैसे बैक्टीरियल, फंगल और वायरल हो सकता है। अगर समय रहते इस बीमारी का इलाज ना किया जाए तो यह जानलेवा भी साबित हो सकती है। अक्सर लोग अपने शरीर में होने वाले बदलाव की तरफध्यान नहीं देते लेकिन यह ब्लड इंफेक्शन का संकेत हो सकते हैं। इस बीमारी के तीन स्टेज होते हैं और पहली ही स्टेज में इसके लक्षण दिखाई देने लगते हैं। जितनी जल्दी इसके लक्षणों को समझकर इलाज करवा लिया जाए, उतनी जल्दी रोगी की जान बचाई जा सकती है।

स्किन प्रॉब्लम्स

ब्लड में इंफेक्शन होने पर त्वचा में पीलापन, लाल चकत्ते, खुलजी, जलन और रैशेज की समस्या होने लगती हैं। अगर आपको भी यह लक्षण दिखाई दे तो तुरंत जांच करवाएं।

दिल की धड़कन बढ़ना

खून में इंफेक्शन होने के कारण दिल तक ऑक्सीजन सही मात्रा में नहीं पहुंच पाती, जिसके कारण दिल की धड़ने तेज रफ्तार से चलने लगता है। अगर आपको भी कई दिनों से ऐसा हो रहा है तो डॉक्टर से सलाह लें।

यूरिन का ना आना

यूरिन क कारण लिवर अपना काम ठीक से नहीं कर पाता, जिससे यूरिन कम उत्पन्न होता है।

मानसिक तनाव

ब्लड में इंफेक्शन होने के कारण शरीर में कुछ ऐसे कैमिकल्स रिलीज होते हैं, जो मानसिक तनाव का कारण बन सकते हैं। साथ ही इंफेक्शन के कारण दिमाग में न्यूट्रीशन और ऑक्सीजन सही मात्रा में नहीं पहुंच पाते, जिसके कारण तनाव होने लगता है।

चिड़चिड़ा स्वभाव

हालांकि यह कोई ठोस कारण नहीं है लेकिन अगर बाकी लक्षणों के साथ चिड़चिड़ाहट और गुस्सा अधिक आए तो एक बार डॉक्टर से सलाह लें।

बार-बार चक्कर आना

इसके कारण दिमाग में ठीक से ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाता है, जिसका वजह से चक्कर आने की परेशानी भी हो जाती है। इतना ही नहीं, इसके कारण अनिद्रा की समस्या होना भी आम बात है।

तेज बुखार

इसके कारण शरीर का तापमान बढ़ जाता है, जिसके कारण तेज बुखार और शरीर में कपकपी होने लगती है। अगर दवा से बुखार कंट्रोल में ना आए तो अपने डॉक्टर से जरूर सलाह लें। उल्टी और घबराहट

अगर खून में कोई समस्या हो रही है तो आसानी उल्टी और दस्त के साथ-साथ घबराहट हो सकती है। हालांकि इसमें चिंता की कोई बात नहीं है लेकिन एक बार अपने डॉक्टर से सलाह जरूर लें।

मुंह से आने वाली बदबू देती है कई गंभीर बीमारियों के संकेत

कुछ लोगों के मुंह से हमेशा ही बदबू आती रहती है और जिसके कारण अक्सर लोग माउथ फ्रेशनर या अन्य चीजों का प्रयोग करते हैं। अमूमन माना जाता है कि सांसों से आने वाली बदबू का मुख्य कारण ओरल हेल्थ का सही तरह से ख्याल न रखना होता है। लेकिन वास्तव में मुंह से आने वाली बदबू कई गंभीर बीमारियों के संकेत देती है। तो चलिए जानते हैं कि किन बीमारियों के चलते मुंह से बदबू आने लगती है-

मसूड़ों की बीमारी

अगर किसी व्यक्ति को मसूड़ों की समस्या है तो इससे सांसों से बदबू आने लगती है। इसलिए अगर किसी व्यक्ति को मसूड़ों में परेशानी होती है तो उसके मुंह से बदबू आना स्वाभाविक है।

कैंसर

आपको शायद जानकर हैरानी हो लेकिन कैंसर भी मुंह से बदबू आने का एक कारण है। मुंह का कैंसर होने पर व्यक्ति की सांस की गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है। इसके अतिरिक्त, सांसों से आने वाली बदबू कैंसर से कैंसर को पहली स्टेज में ही पहचाना जा सकता है। वैसे फेफड़ों का कैंसर होने पर भी व्यक्ति की सांसों से बदबू आने लगती है। वहीं कैंसर होने पर कीमोथेरेपी और विकिरण चिकित्सा के कारण मुंह में लार का उत्पादन प्रभावित होता है और जिससे मुंह में सूखापन आता है। पर्याप्त लार प्रवाह के बिना मुंह से बदबू आनी शुरू हो जाती है।

पाचन में परेशानी

जब व्यक्ति का पाचन तंत्र सही तरह से काम नहीं करता तो उसके मुंह से बदबू आने लगती है। दरअसल, पेट में गड़बड़ी होने पर उसमें गैस बनने लगती है और वह गैस मुंह से बाहर आती है। जिससे व्यक्ति की सांसों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

मधुमेह की समस्या

अगर आप मधुमेह से पीड़ित हैं तो आपके मुंह से बदबू आने लगती है। मधुमेह रक्त-शर्करा के स्तर में उतार-चढ़ाव का कारण बनता है, जिससे सांस से खराब होने वाली बीमारी पीरियडोंटल भी हो सकती है। दांत व मसूड़ों में अतिरिक्त ग्लूकोज बैक्टीरिया को बढ़ाता है, जिससे मसूड़ों की बीमारी, मसूड़े की सूजन और संक्रमण हो सकता है।

साइनस

जब कभी व्यक्ति की नाक बहने लगती है तो उसका असर व्यक्ति की सांसों पर भी पड़ता है। क्योंकि बलगम अक्सर गले की तरफआने लगता है। जिससे गले में बैक्टीरिया जमा होने लगते हैं।

इन देशों में घूमने के लिए नहीं करने पड़ेंगे लाखों रूपए खर्च

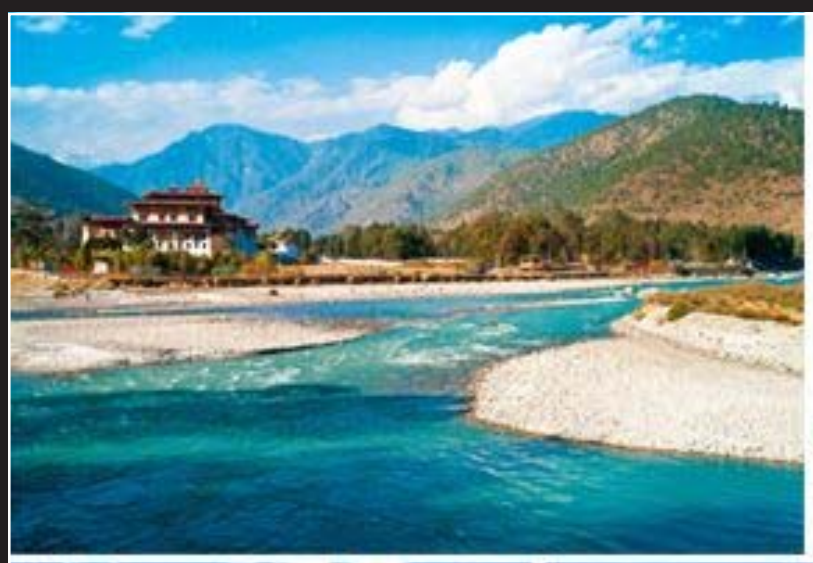

जब बजट में विदेश घूमने की बात हो तो उसमें भूटान का नाम सबसे पहले आता है। यहां घूमने के लिए आपको अपनी जेब के साथ समझौता नहीं करना पड़ेगा। यहां पर आने वाले विजिटर्स को कई बेहतरीन पैकेज मिलते हैं, जिससे वह कम दाम में भी यहां घूमने का पूरा आनंद उठा सकते हैं। जब भी किसी दूसरे देश में घूमने की बात होती है तो अक्सर बहुत से लोग सिर्फइसलिए अपना मन मसोसकर रह जाते हैं कि इसके लिए उन्हें काफी सारे पैसे खर्च करने पड़ेंगे। खासतौर से, एक मध्यमवर्गीय परिवार के लिए विदेश जाना और घूमना यकीनन एक सपने जैसा ही है। जिसे पूरा करने की उनकी इच्छा तो होती है, लेकिन हिम्मत कभी नहीं जुटा पाते। हालांकि कुछ देश ऐसे भी होते हैं, जहां पर घूमने के लिए आपको बहुत अधिक पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है और इसलिए आप वहां पर बिना किसी झिझक के जा सकते हैं। तो चलिए जानते हैं ऐसे ही कुछ देशों के बारे में-

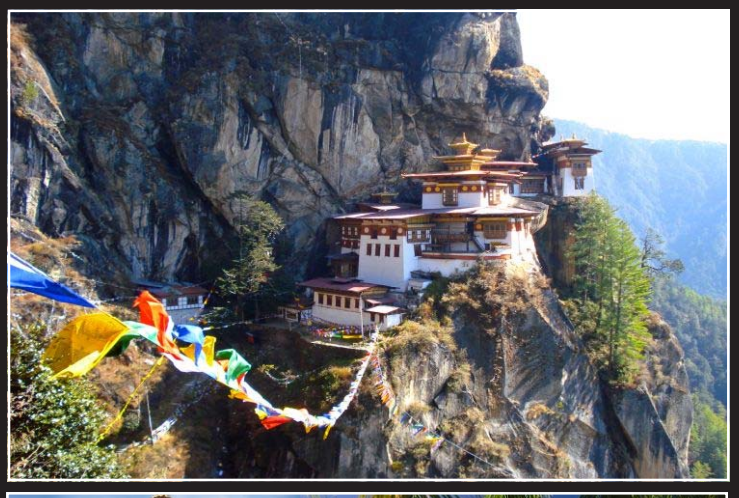

भूटान

जब बजट में विदेश घूमने की बात हो तो उसमें भूटान का नाम सबसे पहले आता है। यहां घूमने के लिए आपको अपनी जेब के साथ समझौता नहीं करना पड़ेगा। यहां पर आने वाले विजिटर्स को कई बेहतरीन पैकेज मिलते हैं, जिससे वह कम दाम में भी यहां घूमने का पूरा आनंद उठा सकते हैं। यहां पर आपको कई अंचभित करने वाली घाटियों से लेकर मैजेस्टिक मोनास्ट्री तक काफी कुछ देखने को मिलता है। इस देश का मुख्य आकर्षण ताकत्संग मठ है जो एक उच्च पर्च पर स्थित है। यहां पर जाने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से दिसंबर तक का माना जाता है।

श्रीलंका

यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में से एक के रूप में घोषित श्रीलंका यकीनन एक सुंदर देश है, जहां पर आपको कुछ बेहतरीन परिदृश्यों देखने को मिल सकते हैं। 2000 से अधिक वर्षों की संस्कृति वाले इस देश में सुंदर समुद्र तटों से प्राचीन किलों और स्मारकों तक देखने के लिए बहुत कुछ है। वैसे तो आप यहां कभी भी जा सकते हैं, लेकिन यहां जाने का सबसे अच्छा समय दिसंबर से अप्रैल तक का माना जाता है।

थाईलैंड

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एशियाई देश अपने खूबसूरत समुद्र तटों और द्वीपों से अधिक के लिए जाना जाता है। पटाया और बैंकाक में असाधारण नाइटलाइफसे लेकर कोह समुई के सफेद रेत के समुद्र तटों तक, आराम और रोमांच का एक पूरा पैकेज है जो यकीनन आपकी छुट्टी को मजेदार और यादगार बनाता है। इसके अतिरिक्त, यह स्थान भारत से यात्रा करने वाले सबसे सस्ते देशों में से एक भी माना जाता है। यहां घूमने का सबसे अच्छा समय नवंबर से अप्रैल की शुरूआत है। वैसे तो इस लिस्ट में और भी कई देशों जैसे नेपाल, मलेशिया, ताइवान आदि को शामिल किया जा सकता है। लेकिन अभी कोरोना संक्रमण के कारण कहीं पर भी यात्रा करना सुरक्षित नहीं है। इसलिए अभी आप यात्रा करने का विचार कुछ समय के लिए टाल दें तो ही बेहतर होगा।

ऑटो कंपनियों को संकट से उबारने के लिए पीयूष गोयल ने दी सलाह, कहा-रॉयल्टी भुगतान कम करें

(एजेंसी)

ऑटो कंपनियों को संकट से उबारने के लिए पीयूष गोयल ने दी सलाह, कहा–रॉयल्टी भुगतान कम करेंप्उंहमै वनतबमरू ळववहसम

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कंपनियों को रॉयल्टी भुगतान कम करने को कहा है ।एक आधिकारिक बयान में गोयल के हवाले से कहा गया है,''गोयल ने देश में मौजूद वाहन कंपनियों से उनकी मातृ कंपनियों का रॉयल्टी भुगतान कम करने के लिए कहा ।इससे उनकी भारतीय इकाइयों को मौजूदा संकट से आसानी से पार पाने में मदद मिल सकती है।'' नयी दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को भारत में काम कर रही वाहन कंपनियों से अपनी मूल कंपनियों को रॉयल्टी भुगतान कम करने को कहा। उन्होंने कहा कि इससे उन्हें इस संकट से उबरने में मदद मिलेगी। सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चर्स (सियाम) की वार्षिक बैठक को संबोधित करते हुए गोयल ने कहा कि देश के वाहन बाजार पर वाहन कंपनियों की अच्छी खासी पकड़ है और वह अपनी मूल कंपनियों को कई करोड़ डॉलर का रॉयल्टी भुगतान करती हैं। रॉयल्टी में कमी उनकी नकदी प्रवाह की समस्या को कम कर सकती है। इससे वाहनों की कीमतें कम करने और घरेलू बिक्री को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

एक आधिकारिक बयान में गोयल के हवाले से कहा गया है, ''गोयल ने देश में मौजूद वाहन कंपनियों से उनकी मातृ कंपनियों का रॉयल्टी भुगतान कम करने के लिए कहा। इससे उनकी भारतीय इकाइयों को मौजूदा संकट से आसानी से पार पाने में मदद मिल सकती है।'' भारत में काम कर रही वाहन कंपनियां को उनकी विदेशी सहयोगी कंपनियों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, ब्रांड या ट्रेडमार्क के उपयोग पर रॉयल्टी का भुगतान करना पड़ता है। गोयल ने कहा कि कुछ अन्य देशों के शुल्क और गैर–व्यापार बाधाएं खड़ी करने से भारत के वाहन निर्यात को नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने उदाहरण दिया कि ऑस्ट्रेलिया जैसे देश ने कुछ विशेष तरह के आयात शुल्क लगाए हैं। वहीं इंडोनेशिया ने आयात का कोटा तय कर दिया है। उन्होंने कहा, ''हम इन मुद्दों का समाधान करने में लगे हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया के साथ हमने बेहतर संवाद स्थापित किया है। मैंने इंडोनेशिया के समक्ष भी मुद्दा उठाया है। उद्योगों को बाजार तक निष्पक्ष पहुंच मिलनी चाहिए।''

गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों के मुद्दे पर गोयल ने कहा कि इसे बाधा के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह सही समय है कि भारत को गुणवत्ता नियंत्रण की ओर देखना चाहिए और दुनिया को उच्च–गुणवत्ता वाले उत्पाद उपलब्ध कराने चाहिए।

गोयल ने कहा वाहन उद्योग को साजो सामान लाने ले जाने के लिये सस्ती लाजिस्टिक्स सेवायें देने के लिये भारतीय रेलवे तैयार है। उन्होंने कहा कि विशेष तौर से निर्यातकों की मदद के लिये सरकार उनके लिये नवोन्मेषी रिण गारंटी योजना के साथ आगे आने को लेकर प्रसन्न होगी।

बीपीसीएल के निजीकरण से पहले कर्मचारियों को बड़ा तोहफा

(एजेंसी) सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि. (बीपीसीएल) ने अपने कर्मचारियों को बाजार मूल्य से एक–तिहाई दाम पर शेयर विकल्प की पेशकश की है। निजीकरण से पहले अपने कर्मचारियों को श्पुरस्कृत करने के लिए कंपनी ने यह कदम उठाया है। शेयर बाजारों को भेजी सूचना में कंपनी ने कहा कि उसके निदेशक मंडल की शुक्रवार को हुई बैठक में प्रस्तावित कर्मचारी शेयर खरीद योजना (ईएसपीएस) को मंजूरी दी गई। इसके लिए शेयरधारकों की मंजूरी ली जाएगी। हालांकि, बीपीसीएल ने इसका ब्योरा नहीं दिया है, लेकिन मामले से जुड़े एक सूत्र ने कहा कि श्बीपीसीएल ट्रस्ट फॉर इन्वेस्टमेंट इन शेयर्स के पास कंपनी की चुकता शेयर पूंजी में 9.33 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इसमें से दो प्रतिशत हिस्सेदारी की पेशकश कर्मचारियों को पिछले छह माह के औसत दाम के एक–तिहाई मूल्य पर की जाएगी। कंपनी में सरकार की

शेयरधारिता में कोई बदलाव नहीं होगा। सरकार बीपीसीएल में अपनी समूची 52.98 प्रतिशत हिस्सेदारी रणनीतिक निवेशक को बेचने जा रही है। कंपनी के निजीकरण के लिए अनुरोध पत्र (ईओआई) देने की अंतिम तारीख 30 सितंबर है। सरकार ने कहा है कि भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि. (बीपीसीएल) के अधिग्रहण के लिए बोली लगाने की इच्छुक कंपनियों को आवश्यक सुरक्षा मंजूरी लेनी होगी। अनुरोध प्रस्ताव (आरएफ्पी) के स्तर पर उन्हें इसकी जानकारी दी जाएगी। निवेश एवं लोक संपत्ति विभाग (दीपम) ने सात मार्च को बीपीसीएल की रणनीतिक हिस्सेदारी की बिक्री के लिए जारी प्रारंभिक सूचना ज्ञापन (पीआईएम) को संशोधित करते हुए कहा, श्पात्र इच्छुक पक्षों (क्यूआईपी) को आरएफ्पी के समय दिए गए ब्योरे और आवश्यकता के अनुसार जरूरी सुरक्षा मंजूरी लेनी होगी। शुरुआती पीआईएम प्रावधान के अनुसार आवश्यक सुरक्षा मंजूरी यदि जरूरी हुई, तो इसे भारत सरकार के निर्देश के अनुसार हासिल करना होगा।

टेलीविजन चौनल्स और प्रोग्राम की लोकप्रियता कुछ यूं मापती है टीआरपी

(एजेंसी)

टीआरपी एक टूल होता है और इसके जरिए इलेक्ट्रॉनिक्स चौनल की रेटिंग मापी जाती है और यह कैलकुलेट किया जाता है कि टेलीविजन चौनलों पर चलने वाला कोई न्यूज अथवा सीरियल कितने लोगों द्वारा देखा जा रहा है। सच तो यह है कि आम तो आम, बल्कि खास लोगों को भी कई बार यह समझ में नहीं आता है कि मीडिया की टीआरपी वास्तव में चेक कैसे की जाती है। आप देखते होंगे कि तमाम टेलीविजन चौनल कभी नंबर वन होने का, तो कई नंबर दो होने का दावा करते हैं। लेकिन इस दावे का वास्तविक आधार क्या है। आखिर इलेक्ट्रॉनिक्स चौनल की टीआरपी चेक कैसे की जाती है ?पिछले कई दशकों से समाज में आये सबसे बड़े बदलावों में से एक रहा है टेलीविजन! इस टीवी के जरिये देश भर के लोग समाचार, धारावाहिक, फिल्में इत्यादि देखते हैं। आज तो डीटीएच के

माध्यम से देश के कोने–कोने तक फैल चुका है। मनोरंजन चौनल्स के साथ देशवासियों की निगाह सर्वाधिक न्यूज चौनल्स पर टिकी होती है। वस्तुत: आज के समय इसे ही मेनस्ट्रीम मीडिया कहा जाता है ।सच कहा जाए तो, लोकतंत्र का प्रहरी होता है मीडिया और उसकी इस भूमिका ने लोकतंत्र की रक्षा सर्वदा ही की है। सरकार किसी भी नियम कानून को बनाती है और यह लोकतंत्र की सबसे ताकतवर संस्था भी है। लब्बो–लुआब यह कि समस्त जिम्मेदारी इंडियन टेलीविजन ऑडियंस मेजरमेंट की होती है और यही एजेंसी, उपलब्ध डेटा के आधार पर निश्चित करती है कि कौन सा चौनल और उसका कौन सा प्रोग्राम कितनी देर के लिए देखा गया है और उसकी पॉपुलैरिटी का एग्जैक्ट कैलकुलेशन क्या है। अब आप कहेंगे कि यह तो एक आंकड़ा भर है, लेकिन इसके कारण मीडिया पर यह आरोप क्यों लगाया जाता है कि मीडिया टीआरपी के लिए अपने सिद्धांतों से समझौता करती है या चौनल टीआरपी पर वही सीरियल दिखाते हैं जिससे समाज में कई बार ठीक संदेश नहीं जाता हैं। आखिर क्यों वह अपनी भूमिका के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं, तो जान लीजिए कि टीआरपी से चौनल की कमाई का सीधा संबंध है !कल्पना कीजिए कि किसी चौनल की टीआरपी अधिक है, उसकी व्यूअरशिप अधिक है तो जाहिर तौर पर उस चौनल पर जो भी विज्ञापन चलेगा।

जियो के चार साल में 40 गुना कम हुई डेटा की कीमतें, खपत में देश पहुंचा पहले नंबर पर

देश के दूरसंचार क्षेत्र में चार साल पहले जब रिलायंस जियो ने कदम रखा तो किसी को उम्मीद नहीं थी कि यह कंपनी कुछ ही सालों में इस क्षेत्र में डेटा बदलाव और क्रांति की जनक बनेगी तथा इसके आगमन से डेटा की कीमतें 40 गुना तक कम हो जाएंगी। पांच सितंबर 2016 को दूरसंचार क्षेत्र में कदम रखने वाली मुकेश अंबानी की रिलायंस जियो ने चार साल में ही क्षेत्र की तस्वीर बदलकर रख दी और इस अवधि में डेटा की कीमतें जहां करीब 40 गुना कम हुई वहीं देश मोबाइल डेटा खपत में मामले में 155वें स्थान से आज पहले नंबर पर पहुंच गया। जियो के 2016 में आने के समय उपभोक्ता को 1 जीबी डेटा के लिए 185 से 200 रुपये तक खर्च करने पड़ते थे। वर्तमान में रिलायंस जियो के लोकप्रिय प्लान्स में ग्राहक को प्रति जीबी डेटा के लिए करीब पांच रुपये ही खर्च करना पड़ते हैं। डेटा खर्च किफायती होने का परिणाम है कि इसकी खपत में अप्रत्याशित बड़ा उछाल आया ।जियो आने से पहले जहां डेटा खपत मात्र 0.24 जीबी प्रति ग्राहक प्रति माह थी, वहीं आज यह कई गुना बढ़कर 10.4 जीबी हो गई है। कंपनी सूत्रों ने जियो के चार साल पूरा होने के मौके पर शुक्रवार को कहा कि कोरोना काल में किफायती डेटा वर्क फ्रॉम होमश्के लिए संजीवनीश्साबित हुआ। लाकडाउन के कारण जब बड़ा हो या बच्चा घर से निकलना लगभग बंद था , वर्क फ्रॉम होम ही जरूरी कामों को निपटाने का जरिया बना। श्वर्क फ्रॉम होमश् हो या बच्चों की ऑनलाइन क्लास, रोजमर्रा का सामान मंगाना हो या डॉक्टर से परामर्श के लिए ऑनलाइन समय लेना, सब काम तभी संभव हो सका जब डेटा की कीमतें हमारी जेब पर भारी नहीं पड़ी। यह जियो का ही प्रभाव है कि डेटा की कीमतें आज ग्राहकों की पहुंच में हैं। वर्ष 2106 में रिलायंस की सालाना आम बैठक में एशिया के सबसे अमीर मुकेश अंबानी ने जियो के साथ समूह के जब दूरसंचार क्षेत्र में कदम रखने का ऐलान किया था तो देश मोबाइल डेटा खपत के मामले में 155 वें स्थान पर था। आज 4 साल बाद जियो की डेटा क्रांति का परिणाम है कि दुनिया में देश ने इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित किया। भारतीय दूरसंचार नियायक प्राधिकरण (ट्राई) के मुताबिक अमेरिका और चीन मिलकर जितना मोबाइल 4जी डेटा खपत करते हैं उससे कहीं ज्याद अकेले भारत के लोग डेटा का इस्तेमाल करते है। देश का 60 फीसदी से ज्यादा डेटा जियो नेटवर्क पर इस्तेमाल होता है। जियोफाइबर के नए प्लान्स के साथ रिलायंस जियो ने एक बार फिर बाजार में हलचल उत्पन्न की है। पहली बार कोई कंपनी सही मायनो में असीमित डेटा खपत वाला प्लान लाई है। मतलब प्लान के साथ कनेक्शन की स्पीड ही कम या ज्यादा होगी। ग्राहक जितना चाहे उतना डेटा इस्तेमाल कर सकता है। यह प्लान देश में डेटा खपत को नए सिरे से परिभाषित करेगा। जियो ने दूरसंचार में कदम रखने के तुरंत बाद ही कई नए अभिनव प्रयोग किए। इसमें मुफ्त वॉयस कॉलिंग और किफायती डेटा तो था ही, साथ ही 2जी नेटवर्क का इस्तेमाल करने वाले और ग्रामीण भारत के लिए कंपनी बेहद सस्ते दामों पर 4जी जियो फोन ले कर आई।

चौपहिया वाहनों में एक जनवरी से फास्टैग होगा अनिवार्य, थर्ड पार्टी इंश्योरेंस के लिए भी हो सकता है जरूरी

(एजेंसी) नयी दिल्ली। गाड़ियों में फास्टैग को लेकर सरकार लगातार कुछ न कुछ बदलाव करती रहती है। अब उन्होंने 1 दिसंबर, 2017 से पहले बिके हुए चौपहिया वाहनों के लिए फास्टैग को अनिवार्य कर दिया है। ऐसे में यह व्यवस्था एक जनवरी से लागू होगी। सरकार ने इसके लिए मोटर वाहन कानून में बदलाव का प्रस्ताव रखा है। जिसका मतलब साफहै कि पुरानी गाड़ियों में जनवरी 2021 से पहले फास्टैग लगाना जरूरी होगा।

इस संबध में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने एक मसौदा जारी किया है और इस पर आम लोगों से सुझाव मांगे गए हैं। इसके अलावा, अब कार का थर्ड पार्टी इंश्योरेंस कराने के लिए फास्टैग को अनिवार्य बनाने का प्रस्ताव भी जारी किया है। मिली जानकारी के मुताबिक, 1 अप्रैल, 2021 से चौपहिया वाहनों के थर्ड पार्टी इंश्योरेंस के लिए फास्टैग जरूरी किया जाना प्रस्तावित है। एक अधिकारी ने बताया कि इन दोनों प्रस्तावों के बारे में वाहन मालिकों से सुझाव मांगे गए हैं। इसके अतिरिक्त यह भी अनिवार्य किया गया था कि ट्रांसपोर्ट वाहनों के फिटनेस सर्टिफिकेट तभी रिन्यू होंगे जब उनके पास फास्टैग होगा। दरअसल, भारत सरकार चाहती है कि टोल प्लाजा पर लगने वाले जाम को कम किया जाए।

इसके लिए वह लगातार फास्टैग को बढ़ावा देने की कोशिश करती रहती है। इसके लिए उन्होंने मुफ्त में भी फास्टैग उपलब्ध कराए हैं फिर भी लोग इसे अपनी गाड़ियों में लगाने से कतराते हैं। क्या है फास्टैग ? फास्टैग को इलेक्ट्रानिक टोल कनेक्शन सिस्टम भी कहा जाता है। भारत में इसकी शुरुआत सबसे पहले साल 2014 में हुई थी। यह एक तरह का रेडियो फ्रिक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग है। जिसके जरिए सरकार वाहन चालकों को राहत देने जा रही है। दरअसल, सरकार ने राष्ट्रीय राजमार्गों पर बने टोल प्लाजा लेन को इलेक्ट्रानिक टोल कनेक्शन से लैस किया है।

बिग बॉस के नए सीजन के लिए सलमान खान ने बढ़ाई अपनी फीस, शो होस्ट करने के लिए करेंगे करोड़ो फीस

टीवी का पॉपुलर शो बिग बॉस एक बार फिर से दर्शकों का मनोरजंन करने के लिए आ रहा है। इस बार बिग बॉस का 14वां सीजन आएगा और वह अभी से भी चर्चा का विषय बना हुआ है। कंटेस्टेंट को लेकर कभी बिग बॉस का यह सीजन सुर्खियों में बना जाता है तो कभी इसके घर के नए फॉर्मेट को लेकर बनता है। इसी बीच सलमान खन बिग बॉस 14 में कितनी फीस ले रहे हैं वह चर्चा का विषय बन गया है। बिग बॉस 14 सलमान खान इस साल भी होस्ट करते हुए नजर आएंगे। टीवी का सबसे फेमस रियलिट शो अक्टूबर में शुरु होगा और एक घर के अंदर कई कंटेस्टेंट बंद होंगे। सलमान खान बिग बॉस के लिए कितनी फीस चार्ज करते हैं हर सीजन में यही बात सबसे ज्यादा चर्चा में बनी रहती हैं। इस साल भी ऐसा ही कुछ देखने को मिल रहा है।बिग बॉस के हर सीजन में अपनी फीस सलमान खान बढ़ाते हैं। सलमान खान ने इस सीजन में जितनी फीस की मांग की उतनी ही शो के मेकर्स ने दी। सूत्रों के हवाले से पता चला है कि बिग बॉस 14 होस्ट करने के लिए तौर पर सलमान खान 450 करोड़ रूपए लेंगे। इस रकम के अनुसार, सलमान खान को 20 करोड़ रूपए एक एपिसोड के मिलेंगे। सोशल मीडिया पर यह खबर आग ही तरह फैल रही है। जिसने भी इस खबर को सुना है वह चौंक गया है। हालांकि सलमान खान की तरफ से यह खबर नहीं आई है। लेकिन सूत्रों की मानें तो पिछले सीजन से ज्यादा सलमान खान इस सीजन में फीस लेंगे। हर सीजन से पहले सलमान खान की फीस को लेकर सुर्खियां बनी होती हैं। सलमान खान की फीस पर सबकी निगाहें बिग बॉस के नए

सीजन शुरु होने से पहले हो जाती है। इस खबर पर दर्शक खूब अपनी प्रतिक्रिया सोशल मीडिया पर दे रहे हैं। बिग बॉस के हर सीजन में फटकार लगाते सलमान खान नजर आते हैं साथ ही वह घरवालों के मसले भी सुलझाते देखते हैं। बिग बॉस के 13वें सीजन ने टीआरपी के सारे रिकॉर्ड तो तोड़े थे साथ ही कई और भी बनाए थे। बता दें कि फिल्मसिटी में बिग बॉस 14 का सेट तैयार हो रहा है। 4 अक्टूबर को शो का ग्रैंड प्रीमियर होगा।

कंगना रनौत ने अब अनुभव सिन्हा पर तंज कसते हुए कहा-आपको ऐसी पार्टियों में नहीं बुलाया.....बॉलीवुड की क्वीन कंगना रनौत पिछले काफी समय से सोशल मीडिया पर एक्टिव रह रही हैं। फिल्म इंडस्ट्री के कई बड़े सितारों पर हमला उन्होंने सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद किया है और कई संगीन आरोप उनपर लगाएं हैं। एक निजी चौनल को कंगना रनौत ने हाल ही में एक इंटरव्यू दिया है और उस दौरान उन्होंने कहा कि ड्रग्स का सेवन 99 प्रतिशत बॉलीवुड सितारों ने अपने जीवन में किया है। हालांकि ऐसा ही एक ट्वीट करते हुए कंगना ने इंडस्ट्री के कुछ एक्टर्स का नाम लिया और उन्हें डोप टेस्ट करवाने का कहा। इसके बाद निर्देशनक अनुभव सिन्हा ने कंगना के इस ट्वीट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए जवाब दिया। अनुभव सिन्हा ने अपने ट्वीट में बिना कंगना का नाम लिए कहा,जो कोई भी कह रहा है कि इंडस्ट्री में 90 फीसदी लोग ड्रग्स लेते हैं,वह खुद ड्रग्स पर होगा। यहां तक कि ड्रग्स इंडस्ट्री में भी ये प्रतिशत कम है। कम प्रतिशत होने की बात कर रहे हैं। ठीक है इसे रहने दें। अपने इस ट्वीट में भले ही अनुभव सिन्हा ने किसी का नाम नहीं लिया लेकिन कंगना की तरफ ही उनका इशारा था। फिर उसके बाद कंगना ने इसका जवाब देते हुए ट्वीट किया और कहा, मैंने ज्यादातर हाई प्रोफाइल पार्टीज और बड़े सफल सितारों के करीबी सर्कल की बात की है।

कुछ ऐसे स्टार्स जिनका अपने ऑनस्क्रीन पैरेंट्स पर आया दिल

बॉलीवुड जगत से लेकर टीवी तक कई सारे ऐसे कलाकार रहे हैं जिनकी भाई-बहन वाली जोड़ी काफी ज्यादा हिट हुई,मगर इनके रिश्ते की असलियत तो यह थी कि इन्होंने रियल लाइफ में एक-दूसरे से शादी रचा डाली। वहीं इस लिस्ट में कुछ स्टार्स तो ऐसे भी शामिल रहे हैं,जिन्होंने अपने ऑनस्क्रीन पैरेंट्स तक को डेट किया है। तो दूसरी ओर कुछ ने अपने ऑनस्क्रीन मां से शादी कर ली और इसमें से कुछ का तो ऑनस्क्रीन सास के साथ भी नाम जुड़ा है। तो चालिए जानते हैं इस में किस-किस के नाम शामिल हैं। सिद्धार्थ शुक्ला और स्मिता बंसल बिग बॉस 13 का विजेता रहा सिद्धार्थ शुक्ला भी अपनी ऑनस्क्रीन सास स्मिता बंसल के प्यार में पड़ चुके हैं। एक्टर ने उन्हें कुछ समय डेट किया। इन दोनों स्टार्स ने टीवी के सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला सीरियल बालिका वधू में सास और दामाद का रोल अदा किया। राम कपूर और ईशा ग्रोवर टीवी का मशहूर सीरियल बड़े अच्छे लगते हो के स्टार्स राम कपूर और ईशा ग्रोवर भले ही शो में बाप बेटी के किरदार निभाते हुए नजर आए हों,लेकिन रियल लाइफ में इन दोनों के अफेयर की खूब चर्चा हुई थी,मगर जब दोनों की एक-दूसरे को डेट करने का खुलासा हुआ तो इस कपल ने इन बातों को गलत बताया। सुनील दत्त और नर्गिस बात अगर बॉलीवुड की करी जाए तो सुपरहिट फिल्म मदर इंडिया में सुनील दत्त और नर्गिस वैसे तो मां-बेटे बने थे,परन्तु रियल लाइफ में यह एक-दूसरे के साथ शादी के बंधन में बंधे। अंकित गेरा और मोनिका सिंह अभिनेता अंकित गेरा भी अपनी ऑनस्क्रीन मां मोनिका सिंह को डेट कर चुके हैं। इस कपल ने मन की आवाज प्रतिज्ञा में बेटे और मां का किरदार निभाया था। आलोक नाथ और नीना गुप्ता टीवी शो बुनियाद में आलोक नाथ की बहू के किरदार में नजर आई नीना गुप्ता पर्दे की इश ससुर बहू की जोड़ी के रिलेशनशिप की खबरें खूब चर्चा का विषय बनी रही।

रवीना टंडन ने ड्रग्स मामले पर कंगना रनौत की करी बोलती बंद

अपने दमदार अभिनय से बॉलीवुड जगत में अपनी खास पहचान कायम करने वाली अभिनेत्री कंगना रनौत फिल्मों के अलावा अपन बेबाक बयानों और अपने इंटरनेट पोस्ट्स के जरिए भी चर्चा में बनी रहती हैं। दरअसल कंगना अक्सर अपनी बात को सभी के आगे बोल देती हैं। तो ऐसे में अब कंगना को आए दिन सोशल मीडिया की जनता का शिकार होना पड़ जाता हैं,हालांकि बहुत बार ऐसा भी हुआ है जब सोशल मीडिया का एक बड़ा तबका उनका पूरा सहयोग करता है। वैसे सुशांत सुसाइड केस के बाद से कंगना रनौत सोशल मीडिया पर और ज्यादा एक्टिव हो गई हैं और आए दिन अपने बयानों से बॉलीवुड के खिलाफ कई गंभीर दावे करती रहती हैं। हाल ही में भी कुछ ऐसा ही हुआ है जब कंगना ने एक बार फिर से बॉलीवुड को लेकर एक बड़ा दावा किया है,जिसके बाद फिल्म निर्देशक राम गोपाल वर्मा और रवीना टंडन ने अभिनेत्री को करारा जवाब दिया है। अपने हालिया इंटरव्यू में कंगना ने कहा कि फिल्म इंडस्ट्री में तकरीबन 99 प्रतिशत ऐसे लोग हैं जो ड्रग्स का सेवन करते हैं।

अब कंगना के इसी बयान पर वकील महेश जेठमलानी ने इस मुद्दे पर सेलेब्स की चुप्पी को लेकर सवाल उठाया है,जिसके बाद अभिनेत्री रवीना टंडन और राम गोपाल वर्मा अपनी-अपनी बात रखी है। महेश जेठमलानी ने अपने ट्वीट में लिखा कि एक बॉलीवुड अभिनेत्री ने एक टीवी चौनल पर आरोप लगाया है कि बॉलीवुड में करीब 99 प्रतिशत लोग नाककोटिक्स ड्रग्स का सेवन करते हैं और खास बात इंडस्ट्री के किसी व्यक्ति ने उसका विरोध नहीं किया। वैसे इस बहरी चुप्पी से लोगों के पास क्या मैसेज जाएगा? बता दें कि महेश ने अपने ट्वीट से जिस अभिनेत्री को निशाने पर लिया वो कंगना रनौत है।

भोजपुरी की लेडी सिंघम रानी चटर्जी चाहती थी ये फेक न्यूज हो जाए सच, ये है वजह

रानी चटर्जी अपनी भोजपुरी फिल्मों की वजह से सुर्खियों में रहती है. साथ ही अपनी अदाओं और फोटोज के चलते चर्चा में रहती हैं. रानी के फैंस उनकी तस्वीरों से अपनी नजर नहीं हटा पाते हैं. वहीं एक समय गूगल पर रानी चटर्जी की फेक न्यूज खूब चर्चा में रहती थी. इसे लेकर एक्ट्रेस ने कहा था कि काश ये सच हो जाता. भोजपुरी की लेडी सिंघम कही जाने वाली एक्ट्रेस रानी चटर्जी भोजपुरी में लोहा मनवाने के बाद अब हिंदी सिनेमा की तरफरुख कर रही हैं. कई बार वो बॉलीवुड में काम करने की इच्छा भी जता चुकी हैं. वहीं, एक इंटरव्यू में रानी से सवाल किया गया था कि, गूगल ये बताया करता था कि रानी चटर्जी का बॉयफ्रेंड कौन है. तो इसमें रणबीर कपूर का नाम आता था. क्या है सच्चाई? एक्ट्रेस रानी चटर्जी ने इस सवाल के जवाब में हंसते हुए कहा था कि, विकिपीडिया में मेरे बारे में इतनी फेक न्यूज होती है, लेकिन मैं चाहती थी कि ये फेक न्यूज सच हो जाए बस. रानी आगे बताती हैं कि कई सालों तक गूगल में यही चलता रहा. लेकिन दो साल पहले ही मैंने कहकर इसे हटवाया. हाल ही में रानी चटर्जी का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसें फैंस ने खूब पसन्द किया था. इस वीडियो में रानी चटर्जी की लुक देखने लायक था. उन्होंने ब्लू कलर की फ्रॉक और व्हाइट सैंडल पहना रखा है और वह हाथ फैलाकर डांस करती हुई नजर आ रही थी. इस वीडियो के बैकग्राउंड में गाना चल रहा था ये हसीं वादियां, ये खुला आसमां. रानी ने इस वीडियो को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा था- ये हसीं वादियां. बता दें कि रानी चटर्जी को भोजपुरी सिनेमा की क्वीन भी कहा जाता है.

Scholarship & Fee - reimbursement schemes available for all caste categories for all courses.

REGISTRATION / ADMISSION OPEN

ARYAKUL GROUP OF COLLEGES

ARYAKUL COLLEGE OF PHARMACY & RESEARCH
Code : 316
PCI Approved

B.PHARM | M.PHARM Pharmacology/Pharmaceutics/Pharm. Chemistry

- DIRECT ADMISSION in B.Pharm: *Eligibility* - 10+2 Level Examination or its equivalent securing Minimum 50% (45% for S.C./S.T.) Marks in total or required subject combination Physics, Chemistry & one Optional (Maths/Biology/Computer Science).
- DIRECT ADMISSION (LATERAL ENTRY) TO 2nd year in B.PHARM FOR 2/3 YEARS DIPLOMA HOLDERS IN PHARMACY WITH 50% MARKS.
- **FREESHIP OF TUITION FEE**- Provision for girls, economically weaker section (EWS) as defined by GBTU & physically handicapped meritorious students.
- **Eligibility For M.Pharm** : B.Pharm with 45% for SC/ST & 50% marks for gen./obc/min.

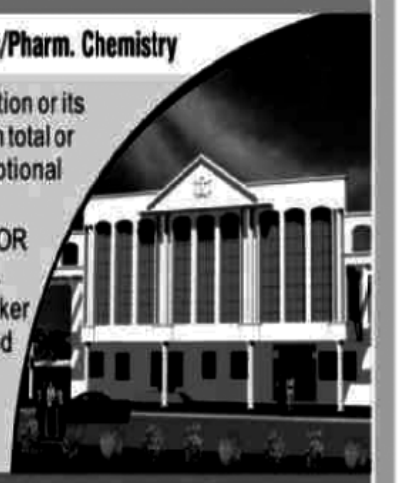

ARYAKUL COLLEGE OF MANAGEMENT
Code : 396

MBA (2 YEARS) Eligibility- Graduation with 45% for SC/ST & 50% for General & OBC
PGDM (2 YEARS) Eligibility- Graduation with 45% for SC/ST & 50% for General & OBC

Best Placement Assistance

ARYAKUL COLLEGE OF EDUCATION

- B.B.A. Eligibility- Intermediate with 45% for SC/ST & 50% for General & OBC
- B.J.M.C. Eligibility- Intermediate with 40% for SC/ST & 45% for General & OBC
- B.T.C. Basic Teachers Certificate (2 Years)

Natkur, P.O. Chandrawal, Aryakul College Road
Adjacent to CRPF Base Camp, Lucknow-02 (4KMs from Amausi Air Port), UP, INDIA
Email: aryakulcollege@gmail.com, Website: www.aryakul.org.in
Ph.: 094153-23205, 090050-92455, 090050-92460, Ph./ Fax : 0522-2817724

IN CAMPUS HOSTEL WITH THE FACILITY OF RECREATION ROOM
TRANSPORT FACILITY AVAILABLE FROM VARIOUS POINTS OF THE CITY TO THE COLLEGE.

इस अखबार के लिए जरूरत है इन्टर्न और संवाददाताओं की
हमसे जुड़ने के लिए संपर्क करें
9919892139, 7843927624
Email : bachpanexpress@gmail.com

Visit : www.utsawdeals.com
Email : callinganandravi@gmail.com
www.facebook.com/utsavdeals

उत्सव Deals

Event Management, P.R. & Advertising Services

CORPORATE EVENTS
SOCIAL EVENTS
SEMINAR
CONFERENCE
MARRIAGE PARTY
BIRTHDAY PARTY
FRESHER PARTY
FAREWELL PARTY
STAGE SHOW
MUSICAL SHOW

We Provide
A Vehicle, A Hotel, Venue, Tent Decorations, Flower Decor, House Lighting, Videography, Catering Service, DJ, Band-Baja, Dhol, Entertainment, Dance Group and anything else you need.

सारा अरेंजमेंट एक साथ आपके द्वार.....

Call: +91-9473649690, 8381960029, 9450231395

DK
TENT HOUSE

Dinesh Kumar - 9839903697
Vibhav Kumar - 9506257029

Add.:
1/72, Piprouli, South City Complex,
Behind Lucknow Public School,
Raebareli Road, Lucknow-226025

E-mail : dk.tent.1987@gmail.com

अधिक जानकारी के लिए हमे सम्पर्क करें।
हेड आफिस: ई–998, रत्नाकर खण्ड, शारदानगर, रायबरेली रोड, लखनऊ
ब्रान्च ऑफिस: सी–9/15ए–1, फातमान रोड मालदहिया, वाराणसी–221002
ई–मेल: bachpanexpress@gmail.com, web : bachpanexpress.in/com
मो. नं. 9919892139, 7843927624

BACHPAN EXPRESS
बचपन एक्सप्रेस

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक मीना पाण्डेय के लिए सीमना प्रिंटिंग प्रेस, नजरबाग हुसैनगंज, कैंट लखनऊ से मुद्रित एवं बी 2/1–2 बी टाईप रेजीडेन्सी, बीबीएयू, लखनऊ से प्रकाशित। प्रधान कार्यालय: ई–998, रत्नाकर खण्ड, शारदा नगर लखनऊ 226025
प्रधान संपादक **मीना पाण्डेय**, सम्पादकीय सलाहाकर **प्रो. गोविन्द जी पाण्डेय**, सलाहकार संपादक **नीलू शर्मा**, सलाहकार समाचार संपादक **श्वेता सिंह**, सलाहकार **अनुकृति**, संपादक **पुष्कर प्रताप सिंह**, ई–मेल: **bachpanexpress@gmail.com, web : bachpanexpress.in/com**
सम्पर्क सूत्र – 7843927624